Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 26 अंक 3 30 मार्च, 2026 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

महान देशभक्त वीरांगना जाट नीरा आर्य - देश की खातिर पति को मौत के घाट उतारा

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

एक महान देशभक्त, दंबग व अद्भुत वीरागना नीरा आर्य की 5 मार्च 2026 को 124वीं जयंती पर लेखक उनके गौरावशाली बलिदान व संघर्षपूर्ण कृत्यों का राष्ट्र हित में वर्णन करने पर गौव अनुभव करता है। वैसे तो राष्ट्र में राष्ट्रीय हित व सुरक्षा में अहम भूमिका निभाने वाली अनेकों वीरागनायें हुई है नेकिन जाट नीरा आर्य एक ऐसी अनूठी वीरागंना थी जो कि निडर, दंबग व तुरंत निर्माण लेने वाली थी जिन्होंने बिट्रिश काल में गुलामी के दौरान राष्ट्र सुरक्षा के लिए गंभीर यातनायें सही और महान देशभक्त व स्वतंत्रता के योद्धा नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की जीवन रक्षा के लिये अपने जासूस पति श्रीकांत जय रजनदास का वध कर दिया जो कि राष्ट्र भक्ति व सुरक्षा की एक अदभुत मिशाल है। भारत की प्रथम जासूस कैप्टन नीरा आर्य का जन्म उत्तर प्रदेश के मेरठ में खेकड़ा गांव के एक सम्पन्न व कुलीन जाट परिवार में हुआ था। लेकिन अचानक से उनके माता–पिता बीमार हो गए। कोई कमाने वाला न होने के कारण एवं इलाज पर खूब पैसा लगने होने के कारण उनके घर के हालात बिगड़ गए। उन्हें कर्ज उठाना पड़ा। लेकिन कुछ समय पश्चात ही उनके माता पिता चल बसे। नीरा एवं उनका छोटा भाई बसंत कुमार अनाथ हो गए। नीरा के पिता की हवेली व जमीन साहूकारों द्वारा कर्ज की वसूली लिए कुर्क कर ली गयी। दोनो बच्चे दर दर भटकते रहे।

भटकते हुए ये बच्चे एक दिन हरियाणा के चौधरी सेठ छज्जूराम जी को मिले। जिनका कलकत्ता में बहुत बड़ा व्यापार था। चौधरी सेठ छज्जूरामजी बहुत बडे दयालु, दानवीर एवं देशभक्त व्यक्ति थे। जब उन्हें बच्चो की हालत पता चली तो उनकी आंखों से आंशु बहने लगे। सेठ जी ने दोनो बच्चो को लालन पालन व शिक्षा के लिए गोद ले लिया। बच्चों ने उन्हें अपना धर्मपिता स्वीकार कर लिया। नीरा व उसके भाई बसन्त को सेठजी कलकत्ता ले गए और उन्हें वहां खूब पढ़ाया लिखाया। पिता के प्रभाव से नीरा व बसंत भी आर्य समाजी बन गए। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि शहीद भगत सिंह भी एक बार अंग्रेज पुलिस से बचने के लिए महीने भर सेठ जी के पास रहे थे और उनके साथ उनकी क्रांतिकारी साथी सुशीला भाभी भी थी। सुशीला भाभी ने नीरा को पढ़ाने का काम किया। भगत सिंह के विचारों की छाया भी नीरा पर पड़ी। सेठ जी के घर क्रांतिकारियों एवं देशभक्त नेताओ का आना जाना लगा रहता था जिसका प्रभाव नीरा पर खूब पड़ा।

एक बार नीरा आर्य अपने साथी बच्चों के साथ पिकनिक पर गयी हुई थी। नीरा को तैरना आता था लेकिन वह कभी बड़े तालाब या बड़ी नदी या समुद्र में नहीं तैरी थी। उस दिन नीरा को समुद्र में तैराकी का मन किया और वह कूद पड़ी। नीरा तब बहुत छोटी थी। समुद्र की लहरों के सामना न कर पाई और डूबने लगी। यह देखकर उनके साथी चिल्लाने लगे। तभी एक नौजवान युवक समुद्र में कूद गया और उसने नीरा की जान बचाई। नीरा ने उसका धन्यवाद किया और कहा कि भाई आप कौन हो, तो नेताजी ने अपना नाम बताया। नेताजी ने कहा कि बहन तुंम्हे अकेले तैराकी न करनी चाहिए तुम्हारे पिता कहां है, तो नीरा ने बताया कि वे बहुत बड़े कारोबारी है आज किसी पार्टी से डील करने मीटिंग में गए हुए हैं जिसकी वजह से आज वो साथ नहीं आ पाए। नीरा ने कहा कि भाई आपने मेरी जान बचाई है मैं आपको कैसे धन्यवाद करूँ, तो नेताजी ने कहा कि आज राखी का दिन है मुझे राखी बांध दो और अपना धर्म भाई स्वीकार करो। इस तरह पहली मुलाकात में ही नेताजी व नीरा घुल मिल गए।

नीरा की जिम्मेदारी सेठ चौधरी छाज्जू राम जी ने ली थी। नीरा व सेठजी आर्य समाजी थे वे जात पात में ज्यादा विश्वास न रखते थे। सेठजी ने नीरा की शादी के लिए एक धनवान व शिक्षित वर ढूंढा। उन्होंने श्रीकांत जयरंजन दास से उनकी शादी करवा दी और शादी में खूब पैसा लगाया। श्रीकांत जयरंजन दास ब्रिटिश पुलिस के खुफिया विभाग में एक अफसर थे। उनके अफसर होने की बात सेठजी को पता थी लेकिन खुफिया विभाग में होने की जानकारी नहीं थी। नीरा को बाद में पता चला कि जयरंजन दास एक देशद्रोही है और अंग्रेजों का तलवेचाट गुलाम है। उसे अंग्रेजों ने पहले राजा महेंद्र प्रताप की जासूसी में लगा रखा था और अब सुभाष चन्द्र बोस की जासूसी में लगा दिया था। नीरा ने अपने बंगाली अफसर पति से कहा कि देश के क्रांतिकारियों के विरुद्ध

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

लड़ना छोड़ दें, पर उसने कहा कि इससे खूब पैसा मिलता है हमारी आने वाली पीढियां बिना कमाएं ही खाएंगी। नीरा ने कहा कि देश से बढ़कर कुछ न होता तुम या तो ये रास्ता छोड़ दो या फिर मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकती। उसके अफसर पति ने कहा कि पैसा होगा तो पत्नियां और बहुत मिल जाएगी। नीरा को यह सुनकर बहुत गुस्सा आया और वह अपने पिता चौधरी सेठ छज्जुराम जी के घर लौट आई।

नीरा के बहुत से रिश्तेदार व साथी आजाद हिंद फौज में शामिल हो रहे थे। नीरा ने भी सुना कि नेताजी ने झांसी रेजिमेंट बनाई है। यह सुनकर नीरा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। नीरा ने अपने भाई बसन्त को अपनी इच्छा बताई जो स्वयं नेताजी को सेना में शामिल होने जा रहे थे। उसने भी हामी भर दी और उसके बाद नीरा नेताजी से मिली। नेताजी ने उन्हें झांसी रेजिमेंट में शामिल कर लिया। नेताजी ने उन्हें साथ में अंग्रेजों की जासूसी का कार्य दिया। नीरा व उनकी साथी भेष बदलकर अंग्रेजों की छावनी में जाती व जासूसी करती थी। नेताजी के उन्हें विशेष आदेश था कि पकड़े जाने पर स्वयं को गोली मार लेना, अंग्रेजों के हाथ जीवित मत लगना।एक बार ऐसी ही एक घटना घटी अंग्रेजों को उनके बारे में पता चल गया वहां से नीरा व उनके सब साथी भागने में कामयाब हो गए लेकिन उनकी एक साथी जीवित ही अंग्रेजों के हाथ लग गयी। बाद में नीरा व उनके साथियों ने उसे छुड़ाने के लिए अंग्रेज छावनी में घुसपैठ व हमला किया। उन्होंने अपने साथी को बचा लिया लेकिन उनकी एक वीर साथी राजमणि देवी के पैर में गोली लग गयी जिससे वह जीवनभर के लिए लंगड़ी हो गयी थी। इस तरह नीरा ने देश की प्रथम महिला जासूस होने का गौरव प्राप्त किया।

एक दिन नेताजी रात्रि के समय अपने टेंट में सोए हुए थे, नीरा व उनके साथियों की जिम्मेदारी रात्रि के पहरे की थी। नीरा टेंट के पीछे की ओर अपनी बंदूक लिए निडर खड़ी थी। तभी नीरा को कुछ आवाज सुनाई दी व एक साया नजर आया, नीरा ने गौर से देखा तो वह उसका पति श्रीकांत जयरंजनदास था जो अंग्रेजों का जासूस अफसर था, वह नेताजी को मारकर 2 लाख का इनाम पाना चाहता था। नीरा ने उसे पहचान लिया और उससे कहा कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो? उसने कहा कि मैं आज नेताजी को मार दूंगा और हम फिर इनाम पाकर खूब मजे करेंगे। लेकिन नीरा ने कहा कि नेताजी मेरे भाई है और इस देश के क्रांतिकारी है नेताजी से गद्दारी मतलब देश से गद्दारी और यह कुकर्म मैं कभी न होने दूंगी। बेहतर होगा कि तुम लौट जाओ वरना मैं तुम्हे यही ढेर कर दूंगी। यह सुनकर श्रीकांत हंसने लगा कि तुम एक भारतीय नारी हो अपने पति के साथ ऐसा नहीं कर सकती। लेकिन जैसे ही श्रीकांत सोए हुए नेताजी की ओर बढ़ने लगा तो नीरा ने अपनी बंदूक की नोक पर लगी संगीन(छुरी) उसके पेट में मारकर उसको ढेर कर दिया।

श्रीकांत ने नीरा पर गोली चला दी। एक गोली उसके कान के पास से व दूसरी गोली गर्दन के नजदीक से छूकर गुजर गई। नीरा बेहोश हो गयी। गोली के आवाज सुनके उनके साथी भागकर वहां आये बेहोश नीरा को गोद में उठाकर स्वयं नेताजी गाड़ी में ले गए और डॉक्टर से कहा कि नीरा को किसी भी कीमत पर बचाओ इस निडर सिपाही की देश को बहुत जरूरत है। नीरा को जब होश आया तो नेताजी ने कहा कि तुमने तो आज नागिनी बनकर मेरे लिए अपने पति की हत्या कर दी। तुम्हारी देशभक्ति को मैं नमन करता हूं। इसके बाद नीरा को नेताजी ने झांसी रेजिमेंट में कैप्टन बना दिया और नेताजी नीरा को प्यार से नागिनी कहने लगे थे। नीरा ने आजाद हिन्द फौज में अपनी वीरता का प्रदर्शन कई बार किया। अंडमान निकोबार असम आदि में आजाद हिंद फौज ने झंडे गाड़ दिए और अंग्रेजी शासन को हिला दिया।

सब क्रांतिकारी सिपाहियों को पकड़ लिया गया और जेल में डालकर उन पर मुकदमा चलाया। लेकिन देश भर में विद्रोह के कारण लगभग सभी फौजियों से केस वापिस ले लिए गए, लेकिन नीरा को अंग्रेजों ने नहीं छोड़ा उसे बंगाल जेल से अंडमान निकोबार की ओर ले गए और काला पानी की सजा दी। नीरा को सेंट्रल जेल अंडमान में ले जाया गया। वहां नीरा को हर तरह की सजा दी गयी। उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया। उससे अंग्रेजो ने पूछा कि बताओ नेताजी कहां है तो नीरा ने कहा कि वे विमान दुर्घटना में चल बसे। उन्होंने कहा कि तुम झूठ बोल रही हो नेताजी जिंदा है बताओ कहां है? तो नीरा हंसने लगी और बोली हां वे जिंदा है...तो उन्होंने कहा कि कहाँ? तो नीरा ने कहा. ..वे मेरे दिल में है। यह सुनकर ब्रिटिश अफसर को गुस्सा आ गया उसने नीरा का आँचल फाड़ा और लुहार के पलास से नीरा

माना दुनिया बुरी है, सब जगह धोखा है। किंतु हम तो अच्छे बने, हमें किसने रोका है।।

के स्तनों को नोचते हुए कहा कि हम सुभाष को तुम्हारे दिल से निकाल देंगे। नीरा की आंखों से आंसू बहे लेकिन मुंह पर मुस्कान थी। नीरा से सबसे कठोर कार्य करवाये गए। नीरा को एक हाथ बांधकर ऊंचा तब तक लटकाया गया जब तक वह बेहोश न हो गयी। पीने का पानी भी नीरा को कम और दूषित दिया जाता था। नीरा शाकाहारी व आर्य समाजी थी अंग्रेजों ने उसे मुसलमानों के हाथ का पका हुआ सड़ा हुआ मांस जबरदस्ती खिलाया। अंग्रेजों ने नीरा को पानी में बार बार डुबोया। नीरा के नँगे बदन पर कोड़े मारे जाते थे। दुष्ट अंग्रेजों द्वारा उनके जिस्म के साथ भी जबरदस्ती खिलवाड़ किये गए। लेकिन नीरा ने हजारों यातनाओं के बाद भी कोई भी खुफिया जानकारी अंग्रेजों से सांझा नहीं की। अंत में गुस्सा होकर अंग्रेजों ने नीरा को गोल चक्कर की एक चरखी पर चढ़ाया और घुमाया। इससे नीरा का पूरा बदन टूट गया नीरा बेहोश हो गयी। बेहोश नीरा को अंग्रेजों ने एक खतरनाक टापू पर ले जाकर फेंक दिया।

जब नीरा को होश आया तो उसने स्वयं को आदिवासियों के बीच पाया। आदिवासी नीरा को अजीब नजर से देख रहे थे और देखने पर वे खतरनाक लग रहे थे। नीरा को उनकी भाषा भी समझ न आ रही थी तो नीरा ने भगवान को याद करने के लिए ऊँ शब्द का उच्चारण किया। ऊँ सुनकर आदिवासियों ने नीरा को देवी समझ लिया। वे ऊँ का उच्चारण होम के रूप में कर रहे थे। नीरा ने भी समझ लिया कि वे किसी भी भाषा व क्षेत्र के हो लेकिन है तो अपने ही लोग। कुछ दिनों में नीरा को उनकी भाषा समझ मे आ गयी तब नीरा ने उन्हें अपनी आप बीती सुनाई। आदिवासी भी अंग्रेजों से चिढ़ते थे उन्होंने नीरा को प्रणाम किया और नीरा को वहां से निकलने के लिए एक मजबूत नाव बनाकर दी व रास्ते में खाने के लिए सब इंतजाम नाव में किये। जैसे तैसे नीरा हैदराबाद पहुंची तब तक देश आजाद हो चुका था।

नीरा का शरीर दुर्बल हो चुका था। नीरा ने हैदराबाद में एक झोपड़ी बना ली व फूल बेचकर गुजारा करने लगी।हैदराबाद में निजाम का राज था और इस्लामी कटरपंथ चरम पर था। नीरा माथे पर तिलक लगाती थी जिसे देखकर जिहादियों ने उनकी पिटाई कर दी व उनकी फूलों की टोकरी बिखेर दी। परन्तु नीरा ने अपने माथे से तिलक नहीं हटाया। नीरा ने हैदराबाद की आजादी के लिए आर्य समाज का सत्याग्रह अपनी आंखों से देखा। नीरा बूढ़ी हो चुकी थी। वह इस दौरान एक बार अपने गांव भी आई लेकिन किसी ने भी उसे नहीं पहचाना और किसी ने मदद न की। केवल उनके पास के गांव के एक क्रांतिकारी चौधरी करणसिंह तोमर ने ही उन्हें पहचाना और उनकी मदद करने की बात की और सरकार से उन्हें मदद दिलाने के लिए संघर्ष की बात की लेकिन नीरा ने मना कर दिया और कहा कि उन्होंने यह संघर्ष किसी सरकारी मदद के लिए नहीं किया। कर्णसिंह ने उन्हें यही रुकने की सलाह दी लेकिन नीरा ने यह कहकर मना कर दिया कि वह उन पर बोझ नहीं बनना चाहती व हैदराबाद लौट आई। एक दिन नीरा की सरकारी जमीन पर बनी झोपड़ी भी तोड़ दी गयी। नीरा बिल्कुल बुढ़ी हो चुकी थी। एक दिन उन्हें तेज बुखार हुआ और वह बेहोश होकर गिर गयी। तब एक लेखक व हिंदी दैनिक वार्ता के पत्रकार तेजपाल सिंह धामा ने उन्हें देखा। ये वही लेखक है जिन्होंने MF हुसैन द्वारा बनाई गई भारत माता की आपत्तिजनक फोटो पर उससे टक्कर ली थी। उन्होंने नीरा को अपनी पत्नी मधु धामा के साथ मिलकर अस्पताल में भर्ती करवाया। नीरा के दस्तावेज देखकर व आत्मकथा पर लिखे पन्ने देखककर अंदाजा लगा लिया कि ये कोई मामूली औरत नहीं है। जब नीरा होश में आई तो धामा जी के कहने पर नीरा ने अपनी आधी अधूरी वीरता व संघर्षों से भरी कहानी धामा जी को बताई। नीरा की आप बीती सुनकर धामा जी भाव विभोर हो गए। कुछ समय बाद नीरा ने 26 जुलाई 1998 को अस्पताल में ही धामा जी के पास अंतिम सांस ली। धामा जी उनके शव को ले जाने के लिए गाड़ी लाने गए इतने में अस्पताल में भीड़ की वजह से उन्होंने नीरा के शव को अस्पताल से बाहर कर दिया। धामा जी जब आये उनकी पत्नी नीरा के पार्थिव शव को गोद मे लिए अस्पताल के बाहर खड़ी थी। धामा जी ने जैसे तैसे तिरंगे का प्रबंध किया और ससम्मान उनका अंतिम संस्कार किया।

उनका अस्थिकलश, डायरी, पुराने फोटोज व अन्य सामान आज भी हैदराबाद के एक मन्दिर में सुरक्षित रखे हुए हैं व स्मारक के लिए आज भी प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस तरह देश की प्रथम महिला जासूस, आजाद हिन्द फौज की महान क्रांतिकारी कैप्टन, नेताजी की धर्मबहन, चौधरी सेठ छज्जुराम की धर्मपुत्री, काला पानी की सजा भोगने वाली नीरा आर्य की संघर्ष भरी जिंदगी का अंत हो गया। ऐसी महान क्रांतिकारी को हम जीवित रहते तो कुछ न दे पाए कम से कम अब उनकी मृत्यु के बाद तो हमें उनके नाम को फिर से जीवित करना चाहिए, उनकी वीरगाथा हर जन तक पहुंचानी चाहिए, उनके लिए स्मारकों का निर्माण करना चाहिए। अतः भारत सरकार द्वारा उनकी संघर्षपूर्ण जीवनी को सभी शिक्षा संस्थानों के पाटयक्रम में लागू किया जाना चाहिए तथा उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय सम्मान दिवस के तौर पर आयोजित करके सार्वजनिक अवकास घोषित किया जाना चाहिए ताकि आने वाली युवापीढ़ी उनके संघर्षमय जीवन से प्रेरणा व मार्ग दर्शन ले सकें।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले

– डा. राजेन्द्र कमार, (मो० 9897821175)

1916 में 'अमरीका को स्वतंत्रता कैसे मिली' शीर्षक से एक छोटी–सी पुस्तक कानपुर से प्रकाशित हुई थी जिसके आखिरी कवर पेज पर कानपुर के प्रसिद्ध कवि जगदम्बा सहाय मिश्र 'हितैषी' की एक गजल छपी थी, जिसकी आखिरी पंक्तियाँ थीं 'वतन के आबरू का पास देखें कौन करता है। / सुना है आज मकतल में हमारा इम्तिहां होगा। / इलाही वह भी दिन होगा, जब अपना राज देखेंगे, / जब अपनी ही जमीं होगी और अपना आसमां होगा। / शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।' यह गजल अंग्रेजों के समय में लिखी गयी थी, जब ऐसा बोलना या सुनना भी अपराध था। लेकिन बाद में इस गजल की आखिरी दो पंक्तियाँ सारे देश में आग की तरह फैल गयी। यह कविता इतनी प्रसिद्ध हुई कि इसे राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर भी अंकित किया गया है। हालांकि इस कविता के लेखक के नाम को लेकर भी मतभेद पैदा किया गया, कुछ लोगों ने इसे शहीद अशफाकुल्लाह, राम प्रसाद बिस्मिल या किसी अन्य क्रान्तिकारी के नाम के साथ जोड़ा किन्तु सबूतों की बिना पर यह साफ हो गया कि इसके लेखक जगदम्बा सहाय मिश्र 'हितैषी' ही थे। लेकिन कविता की ये पंक्तियाँ सरदार भगत सिंह के साथ कुछ इस तरह जुड़ गयी हैं, जैसे उनके लिए ही लिखी गयी हों। जब भी उनके बलिदान को याद किया जाता है, जरूर दोहराई जाती हैं।

'शहीद' अरबी से हिन्दी में लिया गया शब्द है जिसे उस व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है जो देश अथवा किसी लोकहित के कार्य के लिए अपने जीवन की बलि दे दे। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय के मुताबिक सरकारी शब्द कोश में 'शहीद' जैसा कोई शब्द नहीं है और न ही रक्षा मंत्रालय ने ड्यूटी के दौरान जान गंवाने वाले जवानों को 'शहीद' का दर्जा देने का आदेश या अधिसूचना जारी की है। एक जनहित याचिका को खारिज करते हुए अदालत ने यह भी कहा है कि केन्द्र सरकार इस दिशा में कोई निर्देश जारी करे, यह जरूरी नहीं है। देश के लिए जान गंवाने वाले को हर कोई याद करता है। उसके लिए यह पहचान गर्व की बात है और इससे ज्यादा कुछ भी जरूरी नहीं हैं। इस .ष्टि से सीमा पर अपने प्राण निछावर करने वाले सैनिक तो शहीद हैं ही... अपने कर्तव्य को अंजाम देते पुलिसकर्मियों के अलावा जनहित में बलिदान देने वाले सभी लोग शहीद हैं।

भारत को अंग्रेजी दासता से मुक्ति दिलाने में असंख्य पुरुषों और महिलाओं ने औपनिवेशिक शक्ति के विरुद्ध संघर्ष किया, डट कर उनका सामना किया और सब तरह की कुर्बानियाँ दी। जीवन सबसे मूल्यवान है और वे उसे होम करने में पीछे नहीं हटे। उनका बलिदान हमारे इतिहास का कीमती हिस्सा है।

हम हर साल 30 जनवरी और 23 मार्च को शहीद दिवस मनाते हैं और अपने शहीदों को याद करते हैं, उनको नमन करते हैं। ये शहीद दिवस हमें अपने पूर्वजों के त्याग को स्मरण कराते हैं। 30 जनवरी को गांधीजी का बलिदान हुआ था और 23 मार्च को भगत सिंह का। भगत सिंह के साथ सुखदेव और राजगुरु भी मातृभूमि की बलिवेदी पर चढ़ गये थे। महात्मा गांधी और सरदार भगत सिंह, दोनों ने देश को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने के लिए अलग–अलग सिद्धान्तों के साथ संघर्ष किया और मातृभूमि की बलिवेदी पर अपना जीवन होम कर दिया। इन दोनों का त्याग अभूतपूर्व है।

भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष में अपने समुदाय के अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अनेक शहीद हुए। उनका योगदान सशस्त्र विद्रोह, आजाद हिन्द फौज तथा स्थानीय संघर्षों तक फैला था। इसके अलावा असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोड़ों आन्दोलन के दौरान समुदाय के कई ऐसे पुरुषों तथा महिलाओं ने बलिदान दिए जिनके नाम गुमनाम ही रहे।

स्वतंत्रता की बलिवेदी पर चढ़ने वालो में अपने समुदाय के राजा नाहर सिंह और शाहमल जैसे 1857 के विद्रोह के नेता तथा भगत सिंह और करतार सिंह सराभा जैसे क्रान्तिकारी प्रमुख थे जो हँसते–हँसते बलिदान हो गये। इन वीरों ने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली थी।

पिछली शताब्दी के प्रारम्भ में काम की तलाश में अमरीका पहुंचे भारतीयों द्वारा, जिनमें अधिकतर पंजाबी और बंगाली थे, भारत को आजाद कराने के उद्देश्य से अमरीका में गदर पार्टी की स्थापना की गयी थी। पंजाब के लुधियाना जिले के गाँव सराभा में साधारण जाट सिख किसान मंगल सिंह ग्रेवाल और साहिब कौर के यहाँ जन्मे करतार सिंह सराभा भारत से दसवीं पास करके 1 जनवरी, 1912 को आगे के अध्ययन के लिए अमरीका पहुंचे। स्वतंत्र देश अमरीका में

प्रवास शुरू करते ही जगह–जगह एक गुलाम देश के निवासी होने के अनादर और अमरीका में भारतीयों के साथ होने वाले नस्लीय भेदभाव ने सराभा के भीतर सुशुप्त चेतना जागृत करनी शुरू कर दी। पिता की मृत्यु के बाद करतार सिंह सिंह को उनके दादा बदन सिंह ने ही पाला–पोसा और आगे पढ़ने अमरीका भेजा था। सराभा ने बचपन में स्कूली शिक्षा के साथ–साथ अन्य ज्ञानवर्धक पुस्तकें भी पढ़ना शुरू कर दिया था, जिससे उनकी रुचि पढ़ने की हो गयी थी। 1913 के मध्य में जब गदर पार्टी की स्थापना हुई तो अमृतसर के भकना गाँव के निवासी सरदार सोहन सिंह भकना उसके अध्यक्ष और लाला हरदयाल सचिव बने। लाला हरदयाल के भाषणों से प्रेरित होकर और गदर पार्टी के नेताओं के सम्पर्क से सराभा में देश को आजाद कराने की ऐसी जोत जली कि उन्होंने विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़ दी और गदर पार्टी के काम में लग गये। उन्होंने क्रान्तिकारी समाचार पत्र 'गदर' (विद्रोह) के संचालन में लाला हरदयाल को सहयोग देना आरम्भ कर दिया। उसके गुरुमुखी संस्करण के मुद्रण का जिम्मा ले लिया और जल्दी ही गदर पार्टी के प्रमुख और प्रख्यात सदस्य हो गये। हिन्दी, उर्दू, बंगाली, गुजराती, पश्तों और पंजाबी में प्रकाशित 'गदर' अखबार के माध्यम से गदर पार्टी प्रसिद्ध हो गयी। इसी दौरान 1914 में दूसरा विश्वयुद्ध आरम्भ हो गया और ब्रिटेन अपने मित्रों के साथ उसमें शामिल हो गया। गदर पार्टी ने अंग्रेजों को भारत से खदेडने का यह अच्छा अवसर समझा, सशस्त्र युद्ध की घोषणा कर दी जिसके बारे में गदर अखबार के 5 अगस्त 1914 के अंक में "अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा का निर्णय" प्रकाशित किया गया और इसकी हजारों प्रतियाँ भारत की छावनियों, गांवों और शहरों में वितरित की गयी।

अक्तूबर, 1914 में हजारों विद्रोहियों के साथ सराभा भारत लौटे। जहाज से उतरते ही दमन चक्र शुरू हो गया, गदर पार्टी के अधिकतर नेताओं को गिरतार कर लिया गया लेकिन सराभा भूमिगत होकर विद्रोह का प्रचार और तैयारी करते रहे। मुखबिरों से मिली पुख्ता जानकारी के आधार पर ब्रिटिश सरकार द्वारा कई छावनियों में देसी सैनिकों को निहत्था कर दिया गया। विद्रोह विफल हो गया। 2 मार्च 1915 को सरगोधा के सैन्य अड्डे में प्रचार करते हुए सराभा गिरतार कर लिये गये और उनके साथियों बख्शीश सिंह, हरनाम सिंह, जगत सिंह, विष्णु गणेश पिंगले, सुरैण सिंह और सुरैण अमृतसरी के साथ 16 नवम्बर, 1915 को लाहौर में उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया गया। उस समय उनकी आयु केवल साढ़े उन्नीस साल थी। भगत सिंह उन्हें अपना मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत मानते थे और उनका चित्र सदैव अपनी जेब में रखते थे।

मार्च में हम भगत सिंह को याद करते हैं, जिन्हें देश ने मात्र शहीद ही नहीं माना, बल्कि 'शहीदे आजम' का खिताब दिया। पत्रिका के इस अंक में एक लेख उनके बारे में हैं, यहाँ इतना कहना ही पर्याप्त है कि फांसी के समय भगत सिंह कुल 23 वर्ष और पाँच महीने के थे, किन्तु वैचारिक रूप से वे अत्यन्त प्रौढ़ हो चुके थे। इतनी कम आयु में उन्होंने दुनिया के सभी राजनैतिक विचारों और सिद्धान्तों, राजनीतिज्ञों, क्रान्तियों और क्रान्तिकारियों के बारे में जानकारी हासिल कर ली थी. अध्ययन कर लिया था। हालांकि अनेक बार उन्हें उग्रवादी, गर्म दिमाग के क्रान्तिकारी के रूप में पेश किया गया, जो अपने देश की आजादी के लिए दीवाना हो कर मर मिटने को तैयार था, लेकिन उनके बारे में

विस्तार से उनके साथियों तथा परिवारजन का लेखन, उनके स्वयं के लिखे पत्र और डायरी तथा उनके लिखे हुए साहित्य को पढ़ा जाये तो वास्तविकता इससे बिल्कुल विपरीत मिलती है। वे तोप और तलवार की राजनीति के विरुद्ध थे और वैचारिक क्रान्ति के समर्थक थे। उनका कहना था 'बम और पिस्तौल क्रान्ति नहीं लाते। क्रान्ति की तलवार विचारों की भट्टी पर तेज की जाती है।' उन्हें उनके संगठन का 'थिंक टैंक' कहा जाता था। उन्होंने दुनिया भर की किताबों का अध्ययन किया था और अन्त समय (फांसी पर लटकाये जाने) तक लगातार पढ़ रहे थे। जब जेलर भगत सिंह को फांसी के लिए लेने आया तो भगत सिंह रूस के महान क्रान्तिकारी लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे, जिसके कुछ पृष्ठ ही शेष बचे थे। उन्होंने जेलर को यह कहते हुए कि एक क्रान्तिकारी दूसरे क्रान्तिकारी से मिल रहा है, कुछ देर रुकने के लिए कहा। जब किताब पूरी हो गयी तो उन्होंने छत की ओर किताब फेंकते हुए जेलर को चलने के लिए कहा।

भगत सिंह का अन्तिम नारा और विचार, दोनों की क्रान्ति और स्वतंत्रता के इर्द–गिर्द घूमते थे। वे उच्च कोटि के विचारक और द्रष्टा थे, इसी कारण औपनिवेशिकों के विरुद्ध श्बहरों को सुनाने के लिएश उन्होंने ब्रिटिश धारा सभा में बम फेंका और गिरतार होने के लिए वहीं नारे लगाते रहे, जबकि घटनास्थल से निकल भागने के लिए उनके पास पर्याप्त समय और अवसर था। अपने अन्तिम पत्र में उन्होंने लिखा था, "मुझे युद्ध लड़ते हुए गिरतार किया गया है। मेरे लिए फांसी उपयुक्त नहीं। मुझे तोप के मुँह में डाल दो और उड़ा दो।" इन वीर शहीदों को हमारा नमन।

वीर यौद्धा चौधरी रामलाल खोखर (जाट)

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत)
(मो० 9466110050)

सन् 1001 ई० से 1027 ई० तक मोहम्मद गजनवी (गजनी) ने भारत पर 17 हमले किये, जिसमें उसने सभी हमलो में अनेकों मंदिरों को लूटा और तोड़ा। वहां से अपार धन–दौलत जिसमें हजारों मण सोना–चांदी और हीरे–ज्वाहरात आदि ऊंटों, घोड़ो व गधों पर लाद कर ले जाता रहा। रास्ते में पंजाब, मुलतान, सिंध व जेहलम क्षेत्र के जाटों का हमेशा वर्षच्व रहा। मोहम्मद गजनी के द्वारा भारत के मंदिरों से लूटे हुये धन–दौलत को हमेशा इस क्षेत्र के जाटों ने लूटा। कभी आधा लूट लिया तो कभी 80 प्रतिशत और सन् 1027 ई० में मोहम्मद गजनी द्वारा उनके आखिरी हमले में सोमनाथ के मंदिर से लूटा गया अपार धन–दौलत तो पंजाब के जाटों ने लगभग सारा ही लूट लिया था। सोमनाथ के मंदिर से सोना–चोदी, हीरे–ज्वाहारात जड़े हुये भारी–भरकम दरवाजे भी वह हाथियों पे लादकर ले गया, वो भी पंजाब के जाटों ने मोहम्मद गजनी से छीनकर वापिस सोमनाथ के मंदिर में भिजवा दिये थे। इस तरह का अद्वितीय कार्य पंजाब के जाटों द्वारा ही किया गया था। पंजाब के जाटों में हमेशा से प्राचीन समय में खोखर जाटों का दबदबा रहा है। पंजाब के क्षेत्र में जाट शुरू से ही शक्तिशाली रहे हैं। भारत पर पश्चिम से होने वाले सभी हमले पंजाब के जाटों द्वारा ही रोके जाते रहे। पोरस से लेकर चन्द्रगुप्त मोर्य, सम्राट अशोक, सम्राट विक्रमादित्य, सम्राट समुन्द्रगुप्त, हर्षवर्धन व अनंगपाल तोमर आदि सभी जाट जाति के महान सम्राट रहे है। मोहम्मद गजनी के मरने के बाद काबूल कंधार के क्षेत्र से मोहम्मद गौरी ने भारत पर हमले शुरू कर दिये।

खोखर भारतीय उपमहाद्वीप के पंजाब क्षेत्र का एक जाट समुदाय है जो वर्तमान में भारत और पाकिस्तान के पंजाब और आसपास के क्षेत्रों में निवास करते हैं। भारत में खोखर आमतौर पर हिन्दू और सिख होते हैं जबकि पाकिस्तान में वे मुस्लिम होते हैं। खोखर राजस्थान, पंजाब, सिंध, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात और पाकिस्तान में पाया जाने वाला एक मुख्य जाट गोत्र है। मुस्लिम खोखर लोगों को हिंदू जाट और सिख समुदायों से धर्मान्तरण किया हुआ माना जाता है। मध्यकाल के फारसी इतिहासकार फरिश्ता ने तत्कालीन खोखर लोगों को 'धर्म और नैतिकता विहीन बर्बर' जनजाति कहा है।

जाट उत्तरी भारत और पाकिस्तान में पारंपरिक रूप से किसानों का समुदाय हैं। वह मूल रूप से सिंध की निचली सिंधु नदी–घाटी में खेती करते थे। जाटों ने मध्ययुगीन काल में उत्तर में पंजाब क्षेत्र में पलायन किया और बाद में 17वीं और 18वीं शताब्दी में दिल्ली क्षेत्र, पूर्वोत्तर राजपुताना, पश्चिमी गंगा के मैदानों में पलायन किया। इस्लाम, सिख और हिंदू धर्म को मानने वाले यह लोग अब पाकिस्तान के सिंध और पंजाब प्रांतों में और भारतीय राज्यों पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और गुजरात में रहते हैं।

17वीं शताब्दी के अंत और 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में जाटों ने मुगल साम्राज्य के खिलाफ फिर हथियार उठाए। हिंदू जाट राज्य महाराजा सूरजमल (1707–1763) के अधीन अपने चरम में पहुँच गया। 20वीं शताब्दी तक, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली सहित उत्तर भारत के कई हिस्सों में जमींदार जाट एक प्रभावशाली समूह बन गए। इन वर्षों में, कई जाटों ने शहरी नौकरियों के पक्ष में कृषि को छोड़ दिया और उच्च सामाजिक स्थिति का दावा करने के लिए अपनी प्रमुख आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का उपयोग किया।

सिन्ध से झेलम के दरम्यान बसने वाले खोखर जाट पूर्ववर्ती मध्यकाल में बड़े लड़ाकू हुऐ थे। जिस गजनवी के नाम से बड़े बड़े राजा महाराजा भय खाते थे। जाटों ने उस गजनवी को लूट कर उसके दिल में भय पैदा कर दिया। वह सोक्षनाथ के मन्दिर से लूट के हजारो मण सोना–चाँदी व हिरे–ज्वहारात गजनी नहीं ले जा पाया था। यह ऐतिहासिक प्रमाण है कि इन खोखर जाटों के दिल्ली के तोमर राजाओं से वैवाहिक सम्बन्ध रहे थे। इन खोखरों ने झेलम के आसपास अपना राज्य कायम किया। जब गौरी ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया, राजा पृथ्वीराज चौहान की हत्या कर दी (बिजोलिया शिलालेख अनुसार), तो जाट खापों ने गौरी के खिलाफ बगावत का

अनुभव उम्र से नहीं, परिस्थितियों का सामना करने से आते हैं।

बिगुल बजा दिया। गौरी ने हिन्द की जनता पर अत्याचारों की बाढ़ ला दी। 1205–06 में खोखरों ने लाहौर पर अधिकार कर लिया तथा पंजाब के शासक बनने की घोषणा कर दी।

(मनवेन्द्र सिंह तोमर और दिनेश सिंह बैनीवाल)

दलीप सिंह अहलावत लिखते हैं कि महमूद गजनी की 30 अप्रैल सन् 1030 ई० को मृत्यु हो गई। इसके मरते ही गजनी और हिरात के बीच गौर नामक स्थान से एक नवीन शक्ति का उदय हुआ जिसने गजनी का सम्पूर्ण वैभव नष्ट करके गौर जनपद की वृद्धि के लिए गजनी के वंश को भी नष्ट कर दिया। अलाउद्दीन गौरी गजनी का शासक बना। उसकी मृत्यु के बाद सन् 1173 ई० में शहाबुद्दीन गौरी, जिसको मोहम्मद गौरी भी कहा जाता है, गजनी का शासक बना। इसका छोटा भाई गयासुद्दीन गौर जनपद का शासक बना। शहाबुद्दीह गौरी, अलाउद्दीन गौरी का भतीजा था। यह गौरवंश जाटवंश है जो इस्लाम की आंधी में मुसलमान धर्म के अनुयायी बन गये। शहाबुद्दीन गौरी भी गौरवंश का जाट था।

खोखर समुदाय का इतिहास

चौधरी रामलाल खोखर का जन्म भारत के हरियाणा जिले के बलाली गाँव में हुआ था उनके पिता का नाम श्री रामसिंह खोखर था तथा माता का नाम श्रीमती हंसा खोखर था। रामलाल खोखर के चार बच्चे थे जिनमें से दो बेटियां और दो बेटे थे।

यह भारत के पंजाब क्षेत्र का एक जाट समुदाय है जो कि भारत में वर्तमान समय में और पाकिस्तान के पंजाब और इसके आस–पास के क्षेत्रों में वास करता है। भारतीय मूल के खोखर आमतौर पर हिन्दू और सिख होते है, वहीं पाकिस्तानी क्षेत्र के खोखर मुस्लिम समुदाय के होते है। मुस्लिम खोखर को हिंदू जाट और सिक्ख जाट समुदायों से धर्म परिवर्तित किया हुआ माना जाता है। स्रोत– मध्यकाल के फारसी इतिहासकार फरिश्ता ने खोखर समुदाय के लोगों को (धर्म और नैतिकता विहिन बर्बर जाति कहा है। खोखरों ने मोहम्मद गौरी के खिलाफ विद्रोह किया था। 1206 में गौरी ने इस विद्रोह का बडी निर्दयता से दमन कर दिया था। जिसके पश्चात गजनी वापिस लौटते समय कोह नामक क्षेत्र के धम्याक नामक स्थान पर खोखर समुदाय के लोगो ने मोहम्मद गौरी पर हमला कर दिया और उसकी गर्दन काट दी थी जिसके परिणामस्वरुप उसका पुरा साम्राज्य रेत के महल की तरह ध्वस्त हो गया था।

भारत में खोखर समुदाय की दो अलग–अलग जातियां पाई जाती है। कुतुबशाह ने एक हिंदु राजा की लड़की से विवाह किया, जिसके कारण उनकी वंश परंपरा के लोग कुतुबशाही खोखर के रुप में जाने जाते है। दूसरे खोखर दिल्ली के करीब हिन्दू जाट थे। इस प्रकार खोखर समुदाय जाट खोखर और कुतुबशाही खोखर दो अलग जातियों में विभाजित हो गया। इतिहासिक प्रमाणों के तहत पंजाब के खोखर जाटों के दिल्ली के तोमर जाटों से वैवाहिक सम्बंध रहे हैं। सर्वप्रथम जाट समुदाय ने कश्मीर कि झेलम नदी के किनारे अपने राज्य की स्थापना की। मोहम्मद गौरी ने जब पृथ्वीराज चौहान को मारकर दिल्ली पर कब्जा कर लिया तब खोखर एवं जाटों के पूरे समुदाय ने मोहम्मद गौरी के खिलाफ बगावत का बिगुल बजाया। क्योंकि दिल्ली पर कब्जा करने के बाद मोहम्मद गौरी ने भारतीयो पर अत्याचार और शोषण करना प्रारम्भ कर दिया था। 1205–06 के समय काल में खोखर जाटों ने लाहौर पर कब्जा कर लिया था तथा पंजाब का शासक बनने की घोषणा कर दी थी। सन् 1206 में मोहम्मद गौरी एक बार फिर भारत आया।

सन् 1175 से 1206 ई० तक मोहम्मद गौरी के उत्तरी भारत पर आक्रमण –

मोहम्मद गौरी ने गजनी पर अपना शासन स्थिर करके सम्पूर्ण अफगानिस्तान पर आतंक जमा लिया। फिर उसने भारतवर्ष की ओर बढ़ने का विचार किया। उस समय भारतवर्ष में पृथ्वीराज चौहान का शक्तिशाली शासन दिल्ली एवं अजमेर पर था। जयचन्द राठौर का कन्नौज पर शासन था। सबसे पहले गौरी ने सन् 1175 ई० में ईस्मायल कबीले के मुसलमानों को हराकर मुलतान पर अधिकार कर लिया।

कच्छ के राजाओं को छल से जीत लिया। लाहौर न जीत सकने के कारण, उसने खुसरो मलिक के साथ संधि कर ली और गजनी लौट गया। उसके चले जाने के बाद खुसरो मलिक ने खोखर जाटों की सहायता से सियालकोट के दुर्ग पर घेरा डाल दिया। यह सूचना मिलते ही गौरी ने आकर लाहौर पर आक्रमण कर दिया और कूटनीति द्वारा सन् 1186 ई० में खुसरो मलिक को जीत लिया और उसे मार दिया गया और सुबुक्तगीन वंश का अन्त कर दिया। इस प्रकार लाहौर पर अधिकार कर लिया।

सन् 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध –

पृथ्वीराज, जयचन्द राठौर की राजकुमारी संयोगिता को स्वंयवर से उठा लाया था जिसके कारण जयचन्द पृथ्वीराज से दुश्मनी रखता था। जाट वीरों का इतिहास दलीप सिंह अहलावत, पृष्ठान्त–565

पृथ्वीराज चौहान ने इस युद्ध के लिए हरयाणा सर्वखाप पंचायत और जाट खापों से सहायता मांगी। जाट खापों ने

22000 शूरवीरों की सेना भेजी। उन्होंने बड़ी वीरता के साथ युद्ध किया और मोहम्मद गौरी की सेना को हराकर भगा दिया। (सर्वखाप पंचायत रिकार्ड और जाट इतिहास पृ० 106, लेखक लेटिनेन्ट रामसरूप जून)

पृथ्वीराज अपनी तथा उपर्युक्त सहायक सेना एवं जाट शूरवीरों को साथ लेकर सन् 1191 ई० में तराइन के युद्ध क्षेत्र में गौरी सुलतान की सेना से जा टकराया। दोनों ओर से भयंकर युद्ध होने लगा। राजपूतों ने उसकी सेना के दोनों पक्षों पर बड़ी भीषणता से आक्रमण किया और उसे तितर–बितर कर दिया।

राजा के भाई गोविन्दराय ने सुलतान को भी घायल किया। परन्तु एक खिलजी योद्धा उसको रणक्षेत्र से बाहिर ले गया। इस दुर्घटना से मुसलमानों में भगदड़ मच गई। वे मैदान छोड़कर भागने लगे। इससे पहले उनको हिन्दुओं के कभी इतनी बुरी तरह से नहीं हराया था। सुलतान हारकर गजनी पहुंच गया।

सन् 1192 में मोहम्मद गौरी का पृथ्वीराज से दूसरा युद्ध –

मोहम्मद गौरी ने गजनी जाकर एक शक्तिशाली सेना तैयार की जिसमें अफगान, तुर्क और ईरानी आदि जातियों के सैनिक सम्मिलित थे। जयचन्द राठौर के निमंत्रण पर मोहम्मद गौरी द्वारा एक लाख बीस हजार सैनिकों के साथ सन् 1192 ई० में तराईन क्षेत्र में पहुंच गया। जयचन्द राठौर तथा सोलंकियों की शक्तिशाली सेनायें भी आकर उसके साथ मिल गईं। पृथ्वीराज भी चौहानों तथा अन्य राजपूतों की बड़ी सेना तथा सर्वखाप पंचायत के 18000 मल्ल योद्धाओं को साथ लेकर तराइन के रणक्षेत्र में जा पहुंचा। दोनों ओर की सेनाओं में घमासान युद्ध होने लगा। सर्वखाप के 18000 सैनिक योद्धा, मुसलमान सेना के जिस बाजू पर नियुक्त किए गए थे, वहां पर बड़ी वीरता से धावा करके उन्होंने मुसलमान सैनिकों को मार–मारकर 15 मील पीछे को धकेल दिया। (सर्वखाप पंचायत रिकार्ड)

प्रातः काल से सायंकाल तक घनघोर युद्ध हुआ। सुलतान 12000 अश्वारोही धनुर्धारियों को लेकर राजपूत सैनिकों पर टूट पड़ा जिन्होंने बहुत से राजपूत सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। राजपूत घबरा गए और मुसलमानों के सामने लड़ने का साहस छोड़ बैठे। वे रणक्षेत्र छोड़कर भागने लगे। जाट सैनिक युद्ध करते–करते वीरगति को प्राप्त हुए। मुसलमान इतिहासकार लिखते हैं कि पृथ्वीराज युद्धभूमि छोड़कर सिरसा की तरफ भाग रहा था तो सरस्वती नदी के किनारे महोम्मद गौरी और उसके सैनिको ने पकड़ लिया और मौत के घाट उतार दिया। सुलतान विजयी रहा। पृथ्वीराज की हार के बाद राजपूत संभल नहीं सके और इनकी शक्ति कम होती गई। अब मोहम्मद गौरी का दिल्ली तथा अजमेर पर अधिकार हो गया।

सन् 1194 ई० में मोहम्मद गौरी का कन्नौज के राजा जयचन्द पर आक्रमण –

जयचन्द ने सोचा था कि मेरा शत्रु पृथ्वीराज मारा गया और अब मैं दिल्ली एवं भारत का शासक बन जाऊंगा। किन्तु देशद्रोह का फल चखाने के लिए सन् 1194 ई० में सुलतान गौरी ने कन्नौज पर भी प्रबल आक्रमण कर दिया जिसकी जयचन्द को तनिक भी आशा न थी। दोनों ओर की सेनाओं में यू० पी० के इटावा जिले में चन्द्रावर नामक स्थान पर जमकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में मुसलमानों ने राठौरो की सेना को बुरी तरह हरा दिया। राजा जयचन्द मारा गया। इसके बाद विजयी सुलतान बनारस पहुंचा। उसने मन्दिरों को तुड़वा दिया और उनके स्थान पर मस्जिदें बनवाने की आज्ञा दी। कन्नौज, बनारस आदि के 200 मन्दिरों को तुड़वाकर अपार धनराशि 4000 ऊंटों पर लादकर तथा लाखों हिन्दू गुलाम साथ लेकर मोहम्मद गौरी गजनी पहुंच गया।

गजनी जाने से पहले सुलतान गौरी ने अपने गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक को 1194 ई० में भारत में अपने राज्य का उपशासक नियुक्त कर दिया था। इसने भारतवर्ष के अनेक प्रदेशों को जीत लिया। मोहम्मद गौरी का गुलाम मोहम्मद बिन बख्तियार खिलजी नामक था। उसने सन् 1197 ई० में बिहार को जीत लिया और वहां के बौद्ध विहार तथा स्तूपों को नष्ट कर दिया और अनेक बौद्ध पुस्तकों को नष्ट कर दिया। इससे बौद्ध धर्म की शक्ति को बड़ा धक्का लगा। फिर उसने बंगाल को जीत लिया। वह बिहार और बंगाल का गौरी का उपशासक बनकर राज्य करने लगा।

खोखर जाटों का विद्रोह और मोहम्मद गौरी की मृत्यु –

मिश्र बन्धु के अनुसार मोहम्मद गौरी का राज्य पश्चिम में खुरासान, सीस्तान, पूर्व में बंगाल, उत्तर में तुर्किस्तान, हिन्दूकुश और दक्षिण में बिलोचिस्तान पर था। इसमें काबुल, कन्धार, हिरात, गजनी आदि सम्मिलित थे। मोहम्मद गौरी ने मध्यएशिया पर आक्रमण कर दिया। सन् 1205 ई० में वहां पर इसकी करारी हार हुई। इस हार के बाद सभी प्रदेशों के राज्यपालों ने इसके विरुद्ध विद्रोह आरम्भ कर दिये। मुलतान पर एक नया शासक बन गया। खोखर जाटों ने लाहौर पर अधिकार कर लिया तथा पंजाब के शासक बनने की घोषणा कर दी।

सन् 1205 ई० में खोखरों के विद्रोह को दबाने के लिए मोहम्मद गौरी फिर भारत में आ गया। उसने विद्रोह को दबा दिया। परन्तु जब वह लाहौर से 15 मार्च 1206 ई० को गजनी

वापिस जा रहा था, तब धम्याक के स्थान पर मुलतान के 25,000 खोखर जाटों ने मोहम्मद गौरी की सेना पर धावा बोलकर मोहम्मद गौरी का सिर काट दिया। सिर काटने में मुख्यतः खोखरों के सेनापति चौधरी रामलाल खोखर थे। जिन्होंने मोहम्मद गौरी का सिर एक ही तलवार के वार से उसकी धड़ से अलग कर दिया था और मोहम्मद गौरी को मारकर पृथ्वीराज चौहान का बदला लिया था।

मोहम्मद गौरी के मरते ही गौरी का विशाल साम्राज्य ऐसा अस्त हो गया कि मानो वह जादू का चमत्कार था। (भारत का इतिहास, पृ० 369).

मोहम्मद गौरी के कोई पुत्र न था। उसके मरने के पश्चात् उसकी इच्छा के अनुसार सन् 1206 ई० में उसका गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक देहली साम्राज्य का बादशाह बना। जिसने गुलाम वंश के शासन की नींव रखी।

अन्तरिक्ष में जाने वाली पहली भारतीय महिला - कल्पना चावला

(मार्च 17, 1962 - 1 फरवरी 2003)

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

एक भारतीय अमरीकी अन्तरिक्ष यात्री और अन्तरिक्ष शटल मिशन विशेषज्ञ थी और अन्तरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला थी। वे कोलंबिया अन्तरिक्ष यान आपदा में मारे गए सात यात्री दल सदस्यों में से एक थीं।

भारत की महान बेटी–कल्पना चावला भारम देश के हरियाणा राज्य के करनाल जिले में जन्मी थी। उनका जन्म 17 मार्च सन् 1962 में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री बनारसी लाल चावला और माता का नाम संजयोती देवी था। वह अपने परिवार के चार भाई बहनो में सबसे छोटी थी। घर में सब उसे प्यार से मोंटू कहते थे। कल्पना की प्रारंभिक पढाई "टैगोर बाल निकेतन" में हुई। कल्पना जब आठवी कक्षा में पहुचीं तो उन्होंने इंजीनियर बनने की इच्छा प्रकट की। उसकी माँ ने अपनी बेटी की भावनाओं को समझा और आगे बढने में मदद की। पिता उसे चिकित्सक या शिक्षिका बनाना चाहते थे। किंतु कल्पना बचपन से ही अंतरिक्ष में घूमने की कल्पना करती थी। कल्पना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण था – उसकी लगन और जुझार प्रवशति। कल्पना न तो काम करने में आलसी थी और न असफलता में घबराने वाली थी। उनकी उड़ान में दिलचस्पी J R D Tata जहाँगीर रतनजी दादाभाई टाटा से प्रेरित थी जो एक अग्रणी भारतीय विमान चालक और उद्योगपति थे।

कल्पना चावला ने प्रारंभिक शिक्षा टैगोर पब्लिक स्कूल करनाल से प्राप्त की। आगे की शिक्षा वैमानिक अभियान्त्रिकी में पंजाब इंजिनियरिंग कॉलेज, चंडीगढ़, भारत से करते हुए 1982 में अभियांत्रिकी स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वे संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए 1982 में चली गईं और 1984 वैमानिक अभियान्त्रिकी में विज्ञान निष्णात की उपाधि टेक्सास विश्वविद्यालय आर्लिंगटन से प्राप्त की। कल्पना जी ने 1986 में दूसरी विज्ञान निष्णात की उपाधि पाई और 1988 में कोलोराडो विश्वविद्यालय बोल्डर से वैमानिक अभियंत्रिकी में विद्या वाचस्पति की उपाधि पाई। कल्पना जी को हवाई जहाजों, ग्लाइडरों व व्यावसायिक विमानचालन के लाइसेंसों के लिए प्रमाणित उड़ान प्रशिक्षक का दर्जा हासिल था। उन्हें एकल व बहु इंजन वायुयानों के लिए व्यावसायिक विमानचालक के लाइसेंस भी प्राप्त थे। अन्तरिक्ष यात्री बनने से पहले वो एक सुप्रसिद्ध नासा कि वैज्ञानिक थी।

1988 के अंत में उन्होंने नासा के एम्स अनुसंधान केंद्र के लिए ओवेर्सेट मेथड्स इंक के उपाध्यक्ष के रूप में काम करना शुरू किया, उन्होंने वहाँ वीध्एसटीओएल में सीएफडी पर अनुसंधान किया।

कल्पना जी मार्च 1995 में नासा के अंतरिक्ष यात्री कोर में शामिल हुईं और वे 1997 में अपनी पहली उड़ान के लिए चुनी गयीं थी। उनका पहला अंतरिक्ष मिशन 19 नवम्बर 1997 को छह अंतरिक्ष यात्री दल के हिस्से के रूप में अंतरिक्ष शटल कोलंबिया की उड़ान एसटीएस–87 से शुरू हुआ। कल्पना जी अंतरिक्ष में उड़ने वाली प्रथम भारत में जन्मी महिला थीं और अंतरिक्ष में उड़ाने वाली भारतीय मूल की दूसरी व्यक्ति थीं। राकेश शर्मा ने 1984 में सोवियत अंतरिक्ष यान में एक उड़ान भरी थी। कल्पना जी अपने पहले मिशन में 1.04 करोड़ किलोमीटर या 65 लाख मील का सफर तय कर के 365 घंटों में पृथ्वी की 252 परिक्रमाएँ कीं। एसटीएस–87 के दौरान स्पार्टन उपग्रह को तैनात करने के लिए भी जिम्मेदार थीं, इस खराब हुए उपग्रह को पकड़ने के लिए विंस्टन स्कॉट और तकाओ दोई को अंतरिक्ष में चलना पड़ा था। पाँच महीने की तफ्तीश के बाद नासा ने कल्पना चावला को इस मामले में पूर्णतया दोषमुक्त पाया, त्रुटियाँ तंत्रांश अंतरापृष्ठों व यान कर्मचारियों तथा जमीनी नियंत्रकों के लिए परिभाषित विधियों में मिलीं।

एसटीएस–87 की उड़ानोपरांत गतिविधियों के पूरा होने पर कल्पना जी ने अंतरिक्ष यात्री कार्यालय में, तकनीकी

पदों पर काम किया, उनके यहाँ के कार्यकलाप को उनके साथियों ने विशेष पुरस्कार दे के सम्मानित किया।

1983 में वे एक उड़ान प्रशिक्षक और विमानन लेखक, जीन पियरे हैरीसन से मिलीं और शादी की और 1990 में, एक देशीयकृत संयुक्त राज्य अमेरिका की नागरिक बनीं।

भारत के लिए चावला की आखिरी यात्रा 1991–1992 के नए साल की छुट्टी के दौरान थी जब वे और उनके पति, परिवार के साथ समय बिताने गए थे। 2000 में उन्हें एसटीएस–107 में अपनी दूसरी उड़ान के कर्मचारी के तौर पर चुना गया। यह अभियान लगातार पीछे सरकता रहा, क्योंकि विभिन्न कार्यों के नियोजित समय में टकराव होता रहा और कुछ तकनीकी समस्याएँ भी आईं, जैसे कि शटल इंजन बहाव अस्तरों में दरारें। 16 जनवरी 2003 को कल्पना जी ने अंततः कोलंबिया पर चढ़ के विनाशरत एसटीएस–107 मिशन का आरंभ किया। उनकी जिम्मेदारियों में शामिल थे स्पेसहैब/बल्ले–बल्ले/फरीस्टार लघुगुरुत्व प्रयोग जिसके लिए कर्मचारी दल ने 80 प्रयोग किए, जिनके जरिए पृथ्वी व अंतरिक्ष विज्ञान, उन्नत तकनीक विकास व अंतरिक्ष यात्री स्वास्थ्य व सुरक्षा का अध्ययन हुआ। कोलंबिया अंतरिक्ष यान में उनके साथ अन्य यात्री थे–

कमांडर रिक डी. हुसबंद
पायलट विलियम स. मैकूल
कमांडर माइकल प. एंडरसन
इलान रामों
डेविड म. ब्राउन
लौरेल बी. क्लार्क

अंतरिक्ष पर पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला कल्पना चावला की दूसरी अंतरिक्ष यात्रा ही उनकी अंतिम यात्रा साबित हुई। सभी तरह के अनुसंधान तथा विचार – विमर्श के उपरांत वापसी के समय पश्थ्वी के वायुमंडल में अंतरिक्ष यान के प्रवेश के समय जिस तरह की भयंकर घटना घटी वह अब इतिहास की बात हो गई। नासा तथा विश्व के लिये यह एक दर्दनाक घटना थी।

१ फरवरी २००३ को कोलंबिया अंतरिक्षयान पश्थ्वी की कक्षा में प्रवेश करते ही टूटकर बिखर गया। देखते ही देखते अंतरिक्ष यान और उसमें सवार सातों यात्रियों के अवशेष टेक्सास नामक शहर पर बरसने लगे और सफल कहलया जाने वाला अभियान भीषण दुर्घटना का सत्य बन गया।

ये अंतरिक्ष यात्री तो सितारों की दुनिया में विलीन हो गए लेकिन इनके अनुसंधानों का लाभ पूरे विश्व को अवश्य मिलेगा। इस तरह कल्पना चावला के यह शब्द सत्य हो गए," मैं अंतरिक्ष के लिए ही बनी हूँ। प्रत्येक पल अंतरिक्ष के लिए ही बिताया है और इसी के लिए ही मरूँगी।"

पुरस्कार मरणोपरांतः

काँग्रेशनल अंतरिक्ष पदक के सम्मान
नासा अंतरिक्ष उड़ान पदक
नासा विशिष्ट सेवा पदक

- टेक्सास विश्वविद्यालय एल पासो (यूटीईपी) में भारतीय छात्र संघ (आईएसए) द्वारा २००५ में मेधावी छात्रों को स्नातक के लिए। कल्पना चावला यादगार छात्रवृत्ति कार्यक्रम स्थापित किया गया
- छोटा तारा 51826 Kalpanachawla, एक सात प्रशंसा पत्र के नाम से कोलंबिया (Columbia) चालक दलों।
- 5 फरवरी 2003 को, भारत के प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि उपग्रहों के मौसम श्रृंखला, "METSAT" "कल्पना" के नाम से होगा। श्रृंखला का पहला उपग्रह METSAT-1 (METSAT-1), भारत द्वारा 12 सितम्बर 2002 को "कल्पना–1 (KALPANA-1)" के रूप में शुरू किया जाएगा "कल्पना–2 (KALPANA-2)" 2007 से शुरू होने की उम्मीद है।
- न्यूयॉर्क शहर में जैक्सन हाइट्स क्वींस (Queens) के 74. स्ट्रीट के नाम को 74. स्ट्रीट कल्पना चावला का रास्ताके रूप में पुनः नामकरण किया गया है
- टेक्सास विश्वविद्यालय के Arlington (University of TexasAtArlington) (जहाँ चावला ने एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में मास्टर विज्ञान की डिग्री 1984 में प्राप्त की) में उसके सम्मान में एक शयनागार (dormitory), कल्पना चावला हॉल, के नाम से 2004 में रखा गया
- कल्पना चावला पुरस्कार कर्नाटक सरकार के द्वारा पुरस्कार के रूप में 2004 में युवा महिला वैज्ञानिकों के लिए स्थापित किया गया
- पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज, में लड़कियों का छात्रावास कल्पना चावला के नाम पर है। इसके अतिरिक्त, INR (INR) के लिए पच्चीस हजार, एक पदक और एयरोनाटिकल इंजीनियरिंग विभाग के सर्वश्रेष्ठ छात्र के लिए प्रमाण पत्र और पुरस्कार को स्थापित किया गया है
- नासा ने कल्पना के नाम से एक सुपर कंप्यूटर समर्पित किया है।
- फ्लोरिडा प्रौद्योगिकी संस्थान (Florida Institute of Technology) के कोलंबिया ग्राम सूट के एक शविद्यार्थी अपार्टमेंट परिसरों, में चावला सहित प्रत्येक अंतरिक्ष यात्री के नाम पर हॉल है।

प्यार और सम्मान करने की क्षमता, मनुष्य को ईश्वर का दिया हुआ सबसे बड़ा उपहार है।

- नासा के मार्स एक्सप्लोरेशन रोवर मिशन सात चोटियों के श्रृंखला की हिल्स के नाम से है कोलंबिया हिल्स (Columbia Hills) के नाम पर कल्पना चावला समेत सात अंतरिक्ष यात्री जो कोलंबिया शटल आपदा बाद खो गया उनके नाम से चावला पहारी है
- स्टीव मोर्स (Steve Morse) ने कोलंबिया त्रासदी की याद में डीप पर्पल (Deep Purple) बैंड ने एक गाना बनाया जिसे "संपर्क खोया" कहा इस एलबम पर केले = बनाना (Bananas) गीत पाया जा सकता है
- उसका भाई, संजय चावला, ने टिप्पणी की "मेरे लिए मेरी बहन मरी नहीं, है। वह अमर है। क्या ऐसा नहीं है कि एक सितारा क्या है? वह आकाश में एक स्थायी सितारा है। वह हमेशा ऊपर दिखे जायेंगे जहाँ स वह सम्बंधित है"
- उपन्यासकार पीटर दाऊद (Peter David) ने उनकी 2007 में अंतरिक्ष यात्री के बाद चावला का नाम shuttlecraft (shuttlecraft) के रूप में दिया है, स्टार ट्रेक (Star Trek) उपन्यास स्टार ट्रेकः अगली पीढ़ी, इससे पहले अनादर।
- ज्योतिसर, कुरुक्षेत्र में हरियाणा सरकार ने तारामंडल बनाया जिसका नाम कल्पना चावला के नाम पर रखा गया है।

एक ऐसा अनसुलझा अध्याय

– लक्ष्मण सिंह फौगाट, (मो० 6280830760)

महात्मा गांधी और भगत सिंह का एक ऐसा अनसुलझा अध्याय जिसे आज झूठ की फैक्ट्री चलाने वाले भजपैया अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए ढाल बनाते हैं।

इतिहास के पन्ने जब पलटते हैं, तो धूल अक्सर उन चेहरों पर जमती है जिन्होंने आजादी की लड़ाई में कभी नाखून तक नहीं कटवाया, पर आज वे ही 'अहिंसा के पुजारी' और 'इंकलाब के शेर' के बीच दरार पैदा करने का कुत्सित और घृणित प्रयास कर रहे हैं। यह बहस केवल दो महानायकों की नहीं है, बल्कि उस कालखंड की है जब एक तरफ सत्य–अहिंसा की लाठी थी और दूसरी तरफ फंदे को चूमने वाला वो जज्बा जिससे गोरी हुकूमत की चूलें हिल गई थीं। आज के दौर के कुछ स्वघोषित 'महामानव' और उनके अंधभक्त, जो खुद को राष्ट्रवाद का एकमात्र ठेकेदार समझते हैं, अक्सर यह जहरीला सवाल हवा में उछालते हैं कि क्या गांधी जी ने भगत सिंह को जानबूझकर नहीं बचाया।

मार्च 1931 का वह समय भारतीय इतिहास का सबसे भावुक और मनोवैज्ञानिक तनाव से भरा क्षण था, जहां एक तरफ गांधी–इरविन समझौता हो रहा था, जिसे कुछ लोग 'दो महात्माओं का मिलन' कह रहे थे, वहीं दूसरी तरफ लाहौर जेल की कालकोठरी में मौत का सन्नाटा नहीं, बल्कि इंकलाब का गगनभेदी शोर था। 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजू–ए–कातिल में है' ये पंक्तियां उस समय कागज पर नहीं, बल्कि हिंदुस्तान के हर नौजवान के सीने में धड़क रही थीं और इसी धड़कन से ब्रिटिश हुकूमत के पसीने छूट रहे थे। साक्ष्यों की जुगाली करने वाले भजपैया यह भूल जाते हैं कि 11 फरवरी से लेकर 23 मार्च तक गांधी जी ने वायसराय लॉर्ड इरविन पर हर तरह का कूटनीतिक और नैतिक दबाव बनाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी थी। लॉर्ड इरविन की निजी डायरी और तत्कालीन ब्रिटिश खुफिया दस्तावेज आज भी चीख–चीख कर गवाह देते हैं कि गांधी जी ने सजा को Suspension यानी मुल्तवी करने के लिए हर संभव कानूनी और मानवीय तर्क दिया था।

फिरंगियों के मन में खौफ इतना गहरा बैठ चुका था कि उन्होंने तय वक्त से 11 घंटे पहले ही, सूरज ढलने के बाद जेल मैन्युअल की धज्जियां उड़ाते हुए उन वीरों को फांसी दे दी, क्योंकि उन्हें डर था कि बाहर खड़ी जनता का सैलाब जेल की दीवारें ढहा देगा। गांधी जी का मार्ग सत्याग्रह था, जहां साधन की पवित्रता यानी सर्वोपरि थी, जबकि भगत सिंह का मार्ग Radical Revolution का था, जिसमें दुश्मन को उसकी भाषा में जवाब देना शामिल था। इन दोनों महापुरुषों के बीच Ideological Conflict तो था, लेकिन यानी व्यक्तिगत द्वेष का नामोनिशान नहीं था, क्योंकि दोनों का लक्ष्य एक ही था भारत मां की बेड़ियां काटना। भगत सिंह ने स्वयं जेल से लिखे अपने क्रांतिकारी पत्रों में गांधी जी के जन–आंदोलन की अपार शक्ति को स्वीकार किया था, और गांधी जी ने भी यंग इंडिया में भगत सिंह के अदम्य साहस को Unmatched Bravery का नाम दिया था। शहीद–ए–आजम ने अपने पिता की उस दया याचिका को सिरे से ठुकरा दिया था, क्योंकि वे जानते थे कि एक जीवित भगत सिंह से कहीं ज्यादा शक्तिशाली और खतरनाक शहीद भगत सिंह होगा जो आने वाली सदियों तक फिरंगियों की नींद हराम रखेगा। दिल से निकलेगी ना मर कर भी वतन की उल्फत "मेरी मिटी से भी खुशबू –ए– वफा आएगी" इस

फकीराना जज्बे और शहादत की प्यास को क्या दुनिया का कोई भी समझौता या कोई भी नेता रोक सकता था।

आज जो लोग गांधी जी पर उंगली उठाते हैं, उनके वैचारिक पूर्वज उस दौर में अंग्रेजों की मुखबिरी करने और माफीनामे लिखने में व्यस्त थे, जो आज राष्ट्रवाद का चोला ओढ़कर असली क्रांतिकारियों के वारिस बन रहे हैं। यह कितनी बड़ी विडंबना है कि इस 'नॉन बायोलॉजिकल' अवतार के युग में उन लोगों को देशभक्ति का पाठ पढ़ाया जा रहा है जिनके पुरखों ने लाठियां खाईं और जेल की कालकोठरियों में अपनी जवानी गला दी। इन 'झूठ के सौदागरों' और 'भ्रष्ट जनता पार्टी' के नुमाइंदों को न तो भगत सिंह से प्रेम है और न ही गांधी से, उन्हें तो बस गांधी के महान कद को छोटा दिखाकर अपनी नफरती और विभाजनकारी राजनीति की दुकान चलानी है। गांधी जी ने अपनी मर्यादाओं और सीमाओं में रहकर पूरी ताकत झोंकी थी, लेकिन वे ब्रिटिश राज के सुप्रीम कोर्ट नहीं थे, और न ही उनके पास वो 'दिव्य शक्तियां' थीं जिनका दावा आज के कुछ स्वयंभू नेता करते फिरते हैं। भगत सिंह ने अपनी शहादत खुद चुनी थी, क्योंकि उन्हें पता था कि उनके रक्त की हर एक बूंद इस सोई हुई कौम के रगों में लावा बनकर बहेगी और ब्रिटिश साम्राज्य का अंत सुनिश्चित करेगी।

आज समय की मांग है कि हम इन दोनों महान सपूतों को आपस में लड़ाने वाली ताकतों की पहचान करें और उनके DivideAnd Rule वाले जहरीले एजेंडे को पूरी तरह से बेनकाब कर दें। गांधी जी ने आजादी का रास्ता दिखाया और भगत सिंह ने उस रास्ते पर चलने का जुनून पैदा किया, दोनों ही इस मिट्टी के अनमोल रत्न हैं जिन्हें अलग करना नामुमकिन है। जो लोग आज इतिहास को तोड़–मरोड़कर पेश कर रहे हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि सूरज पर धूल फेंकने से उसकी चमक कम नहीं होती, बल्कि धूल फेंकने वाले की आंखें ही खराब होती हैं। अंततः यह संघर्ष केवल गोरे अंग्रेजों के खिलाफ नहीं था, बल्कि उन भीतरघातियों के खिलाफ भी था जो आज भी हमारे बीच मौजूद हैं और नकली राष्ट्रवाद का ढोल पीट रहे हैं। इंकलाब का नारा आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना 1931 में था, क्योंकि आज हमें अपनों के बीच छिपे उन 'भजपिल्लों' से लड़ना है जो देश की एकता और भाईचारे को दीमक की तरह चाट रहे हैं।

सत्य परेशान हो सकता है, पराजित नहीं। इंकलाब जिंदाबाद!

गामौली के नाम पाती

– सूरजभान दहिया, (मो० 9818120950)

मेरे प्यारे गामौली मोहने, राम – राम।

तैने बसत – पंचमी पर होली का डाँडा गाडने के मौके पे मुझे बुलाया था, नहीं आ पाया, माफी चाहूंगा। द्वादी हरकोर ने गऊ के घी की ज्योत लगाकर बड्डे गोरे में पूजा करके होली का डाँडा गाड दिया होगा। दादी ने फिर गुड बाट कर घर–घर मे कह दिया होगा कि आपणे – आपणे गितवाडे में ढाल – बुरकले गोबर के पाथे। भाई ! मैं जरूर दूर बैठा हूँ पर महानगर की चकाचौध में अपने गाम की परम्पराय नहीं भूला है। वह सब महसूसता बिल्कुल वैसी ही है जब आज से 64 बरस बड़े गौर की माटी का हिस्सा बनकर मैं एक ठेठ देहाती किशोर तेरे अर दूसरे दूसरे ढबियो के साथ कबड्डी खेला करता था। गाम के खेत–खलिहाना में सरसों की पीली–पीली छटा अर पनघट गुंजते स्वर न जाने कितनी उमंगे मेरे मन में जन्म ले रही है और मेरे लिखे शब्द तेरे साथ बैठने का हसास दिला रहें हैं।

मोहने! होली से पहले जरूर आपणी जन्मभूमि को नतस्तक करंगा। होले–खाण का बड़ा जी कर रहा है। घिरानी के चोत में जाल्यागें, लेट के काठे पर होले भूनांगे, मजे तै खॉवगे, बड़ा उतावला हो रहा हूँ। आ रहा हूं, जल्दी आऊंगा जरूर आऊगा, तावला। कोल्हू का माहौल भी मन को चंचल कर रहा हहू – जगह – जगह कोल्हू होते थे, खोई पर ताता–ताता गुड़ धरकर खाया करते थे। पर न जाने क्यों इतने कोल्हू चलने बन्द हो गये, लोगो ने गन्ना ही बोना बन्द कर दिया। किसानों को तीन–चार महिने गुड बनाने में लगे रहने से काफी आर्थिक मदद मिलती थी – पर गन्ना न बौने से उन्हें सर्दियों में ठाली बैठा दिया है। ताऊ निहाल्ले ने तै एक किला ईख बो रखा था, उनका तै कोल्हू चलता होगा–आऊगा वहां पर चाल्यागे, ताता–ताता गुड़ खाकर बीते दिनों को याद करेंगे।

अहा। क्या थे वो मेरे गाँव के दिन। मिलिनियम सिटी – गुरुग्राम से बैग में अपने भीतर खालीपन पाता हूं, बनावट को महसुस करता हूँ, लगाव की जगह दुराव देखता हूं, न पड़ौसी, न कोई भाईचारा। शहर की कृत्रिम जिदंगी ने मानवता को गायब कर दिया है। यहां तो होली का माहौल ही न दिखता। बसन्त स्थापना तथा फाल्गुन के प्रारम्भ से ही होली के संगीत की मन्द गंभीर परंतु वेगवती चारा अविरल रूप मे बहने लगती है। बसन्त का उभार होता है प्रकृति स्वर्णाभदुकूल

से सुसज्जित नवोढ़ा होती है। किसान के खेत सरसों के उत्फुल्ल बसन्ती कुसुमों से भरे होते हैं। ऐसा सरस वेला में फाग की बहार आती है। यहां तो यह वातावरण का किसी को अहसास ही नहीं। होली का उत्सव भ्रातृभाव, भाव एवं प्रीतिभाव को सृजन करता है। दो पडोसी भी शायद कभी बैठक यहाँ करते हो दुखद है भाई।

जब मैं अपने आपको अतीत में ले जाता हूँ तो मुझे स्वतः अपनी पौली की बैठको का स्मरण जाता है। हुक्के की वह गोष्ठियाँ जो रात तक हंसी–मसखरी के साथ गतिमान रहती थी। कैसे–कैसे मजाक नैसी–कैसी प्रेम और सद्भावनाओं से भरी बाते उन गोष्ठियो का अंग थी – वे पुरानी यादे के परम्पराएँ और राम–ग्राम की वह लुभावनवी छवि सब कुछ तो मुझे उत्तेजित करके तुम सब को मेरे करीब ला रही है। बड़ावीर जोहठ के कांठे नीम के पेडसे छलांग लगाकर जोहठ में नहाना, वणी में जाल की लकड़ी से बनी खूलिया के साथ गीन्डो खेलना और दोपहरी में चौपाल में कंचा खेलना सचमुचे म्हारे बडे मौज मस्ती के दिन थे। नहीं लौट सकते वो दिन अब !

पर तूने मुझे बताकर मायूसी में डाल दिया है कि मेरे गावं की परम्पराए टूट रही है अतीत टूट रहा है, लोक विश्वास टूट रहे हैं – धरती से जुडी आस्थाओ में टूटन है और यहां तक कि धरती के स्वर भी 'कासुरे' हो गये है हुक्के की जगह हुकटी ने ले ली है और वह पोलियो में नही चुल्हे के पास चली गई है। सचमुच। यह मेरा गाम कैसे झेल रहा होगा। उसकी मासूमियत को छल–कपटका आवरण तुझ ओढाया जा रहा है। भाई! क्या यह सब कुछ पचा रहे रहे हो, सह रहे हो, कितने जीनट का काम है।

गांव की बदली–बदली फिजा अजनबी दीखती है गुझे टीस हो रही है। अब चौपालों में वर्षा–ऋतु में साज नही बजत, आल्हा नहीं गाई जाती, निहाल दे का गायन नही होता, सारगियाँ खटियो पर रंग गई है, ढ़ोलक फूट गई हैं और झांझ–मंजीरे टूट गए हैं। टी० वी० पर फिल्मी गीतो की चुने जरूर सुनाई देती है फिर मुझे संतुष्टी उस बात की है कि अब भी दादालख्मी, मेहर सिंह जनमानस में समाये हुये है। हाँ मुक्त हसी का स्थान फुसफुसाहटो ने ले लिया है। सद्भावना की जगह साजिशे गाऊ में विकास का डंका बज रहा है– रहडूओं की जगह घरों के आगे बाइके, मारुती और बड़ी गाडियां दिखाई देती हैं। पर है राम–गाम। तेरे बेटे को आर्यसमाजी भजनी नरसिह के शब्द सुनाईदरहे हैं– "राजबदलग्या" ताज बदलग्या, धरती बदलण लाग्यो, अरे। हरियाणा तून बदल्या, तेरे कम्मकती आग्यी। मुझे नही चाहिये यह कृत्रिम बदलाव 7 मुझे तो मेरा भोलासा – सुहवानासा वही गाम चाहियें।

हास–परिहास, उल्लास – उत्साह भरे फागन के दिन ह– फांगे गाई जाती होगी ढप्प आदि बजाये जाग रहे होंगे। वातावरणगे भातृभाव मित्रभाव एवं प्रीतिभाव है जो मानसिक मलिनता को नष्ट कर देता है। सब कुछ याद है मुझे जब रात को कोई, बुढिया पुराली चुरडी सिर नै बाधकर पोपले महसे गाती थी "काची कली अनार की गुलकंद बबूगी रै" एक और आवाज सुनती थीं– ईबताई बुढापे में गुलकद बनेंगी, दूसरी कहती थी रै ताई। कित इमरित्ती बणेगी। कोए खाँसी आला बुड्डा दरड जागा तन्नै।

ये मस्ती भरे संवाद हम छुपकर सुनते थे और आत्म विभोर हो जाते थे, हम।

अकेलापन का है यहाँ भाई। टी० वी० के सामने बैठा हूँ। 'दंगल' फिल्म देख रहा हूँ कुछ कुछ ग्रामीण परिवेश का अहसास हो रहा है। हाँ, दगल–फिल्म देखते–देखते वरुणा गाँव – बरोणा – श्रृदेय स्वतन्त्रता सेनानी मेहरासिह की जन्म भूमि के चूलहुन्डी दंगल की याद ताजा हो गई। वरुणा गांव वरुण देवता से जुडा है, हमारी प्राचीन वैदिक सभ्यता की धरोहर है– अति चनाढ्य। वरुण देवता हमारे रीति–रिवाजो के संरक्षक है। वरुण देवता की सर्मपणता एवं स्मृति मे ही यह दंगल इस गाँव मे चूलहन्डी को आयोजित किया जाता है। याद है हम कितने चाव से चूलहन्डी खेलकर शाम को तीन कोस का फासला पैदल चलकर इस दंगल को देखने जाते थे। मुझे इस दंगल की रमलू पहलवान (सिसाना वासी) और सरजू पहलवानू (भैसवाल वासी) की कुश्ती को याद आ गई, कोई 60 बरस पहले यह कुश्ती लड़ी गई थी, भरे साल के रेफरी ने 30–35 मिनट के बाद कुश्ती बराबरी पर छुडवाई तो हजारों लोगो को उसेजना शान्त हुई थी–क्या कुश्ती थी, हरियाणवी कुश्ती प्रतियोगिता वे निःसन्देह ऐतिहासिक पल थे। इस बार इस दंगल का देखने हेतु मै बेशबरी से इन्तजार कर रहा हूँ।

गाँव की संस्कृति, गांव की मर्यादाएं, गाँव का सौहार्द ही असली भारत की पहचान करवाती है। मगर ऐसा लगता है कि आज इन बातो की चर्चा करने से कतराते हैं लोग। कतराए भी क्यों नही ? भला, गर्मागर्न राजनीति अजगरी भृष्टाचार, धमाकेदार घोटाले, शहरो का वर्चस्व को छोड़कर गाँव की चर्चा करे तो कैसे करे ?

खैर मैंने तो अपनी व्याकुलता इस खत मे लिख डाली। जल्दी मिलूंगा भाई। खेडे की जय हो। बडी को प्रणाम, अर छोटो को मेरा प्यार बॉचना।

वीरचक्र से सम्मानित अमर शहीद श्री धर्मपाल दहिया

– संजीत गिल, रोहतक (मो० 9416521162)

1962 में सीमा विवाद के कारण भारत और चीन के बीच युद्ध छिड़ा। लद्दाख के चुशूल सेक्टर में स्थित रेजांग ला नामक यह स्थान लगभग 18,000 फीट की ऊँचाई पर था, जहाँ कड़ाके की ठंड, तेज हवाएँ और ऑक्सीजन की कमी जैसी कठिन परिस्थितियाँ थीं। रेजांग ला की ऐतिहासिक लड़ाई 18 नवंबर 1962 की सुबह लद्दाख की ऊँची, बर्फ से ढकी पहाड़ियों पर कड़ाके की ठंड हड्डियाँ जमा रही थी। हवा इतनी तेज थी कि सांस लेना भी कठिन था। इसी वीरान और कठोर मोर्चे पर 13 कुमाऊँ रेजिमेंट की 'सी' कंपनी तैनात थी लगभग 120 भारतीय जवान, मेजर शैतान सिंह के नेतृत्व में।

अचानक दूर पहाड़ियों में हलचल हुई। चीनी सेना ने भारी संख्या में बढ़ना शुरू किया। कुछ ही क्षणों में गोलियों और तोपों की गड़गड़ाहट से सन्नाटा टूट गया। भारतीय सैनिकों ने अपनी पोजिशन संभाली कोई घबराहट नहीं, कोई पीछे हटना नहीं।

मेजर शैतान सिंह एक पोस्ट से दूसरी पोस्ट तक बर्फ और गोलियों के बीच दौड़ते रहे। वे हर जवान से कहते–"डटे रहो! यह धरती हमसे साहस मांग रही है।" जब चीनी सेना ने भारी हमला किया, तो भारतीय सैनिकों ने:

अपनी पोजिशन नहीं छोड़ी

आखिरी गोली तक लड़ाई लड़ी

कई जगह नजदीकी (हाथापाई) लड़ाई भी की

जब बाद में क्षेत्र का निरीक्षण हुआ, तो अधिकांश सैनिक अपनी लड़ाकू मुद्रा में ही वीरगति को प्राप्त मिले यह उनके अटल संकल्प का प्रमाण था।

बलिदान और सम्मान

करीब 114 सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए, जबकि बहुत कम जीवित बचे। उनके इस बलिदान ने रेजांग ला को भारतीय सैन्य इतिहास की अमर गाथा बना दिया। मेजर शैतान सिंह के नेतृत्व में लगभग 120 भारतीय जवानों ने अपनी पोस्ट पर डटकर मुकाबला किया। चीनी सेना ने भारी संख्या में कई बार हमला किया। संचार और मदद लगभग असंभव थी, फिर भी जवान अपनी जगह से नहीं हटे। मेजर शैतान सिंह लगातार एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे तक जाकर सैनिकों का उत्साह बढ़ाते और रक्षा का नेतृत्व करते रहे। गंभीर रूप से घायल होने के बाद भी उन्होंने पीछे हटने से इनकार कर दिया। जब गोला–बारूद कम पड़ गया, तब भी जवान अंतिम क्षण तक लड़ते रहे। बाद में जब बर्फ पिघली, तो अधिकांश सैनिक अपनी युद्ध स्थिति में ही वीरगति को प्राप्त मिले यह उनकी अटूट दृढ़ता का प्रमाण था।

सम्मान और विरासत

मेजर शैतान सिंह को उनके अद्वितीय साहस के लिए परमवीर चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित किया गया और कई अन्य सैनिकों को भी वीरता पुरस्कार दिए गए। रेजांग ला की लड़ाई आज भी भारतीय सैन्य इतिहास की सबसे वीर गाथाओं में गिनी जाती है। वहाँ एक स्मारक भी बना है जो इन शहीदों के बलिदान को याद दिलाता है। रेजांग ला का अमर वीर शहीद वीरचक्र धर्मपाल दहिया को नमन

भारत के सैन्य इतिहास में 1962 का रेजांग ला युद्ध साहस, कर्तव्य और बलिदान की ऐसी गाथा है, जो पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। इस अमर कथा में एक नाम गर्व से लिया जाता है मेडिकल सहायक, शहीद वीरचक्र धर्मपाल दहिया जिन्होंने मानवता और देशभक्ति की सर्वोच्च मिसाल पेश की। वो इसी रेजीमेंट में कार्यरत थे, जिनका जिक्र बॉलीवुड मूवी "120 बहादुर" में मेजर शैतान सिंह (अभिनेता फरहान अख्तर) द्वारा एक दृश्य में किया गया है।

हरियाणा के सोनीपत जिले (तत्कालीन रोहतक) के छोटे से गाँव निरथान में जन्मे धर्मपाल दहिया चार भाई–बहनों में दूसरे थे। मेरे पिताजी से लगभग तीन वर्ष छोटे। मेरे माँ पिताजी बताते थे कि बचपन से ही उनमें निर्भीकता और साहस कूट–कूट कर भरा था। वो देशभक्ति से भरी रागनियाँ गाते रहते थे। परिवार के संस्कारों और देशप्रेम की भावना ने उनके मन में एक ही सपना जगाया फौज में जाकर मातृभूमि की सेवा करना। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने कुमाऊँ रेजिमेंट में मेडिकल सहायक के रूप में भर्ती होकर इस संकल्प को जीवन का उद्देश्य बना लिया।

जब 1962 में चीन ने भारत पर हमला किया, तब उनकी शादी को कुछ ही वर्ष हुए थे। परंतु कर्तव्य की पुकार हर रिश्ते से ऊपर थी। रेजांग ला की बर्फीली चोटियों पर, जहाँ सांस लेना भी कठिन था, वहाँ भारतीय सैनिक अदम्य साहस से दुश्मन का सामना कर रहे थे। उसी भीषण युद्ध के बीच धर्मपाल दहिया का दायित्व था घायल साथियों को जीवन देना, चाहे इसके लिए उन्हें गोलियों की बारिश के बीच क्यों न जाना पड़े। गोलीबारी इतनी तीव्र थी कि हर क्षण मृत्यु सामने खड़ी

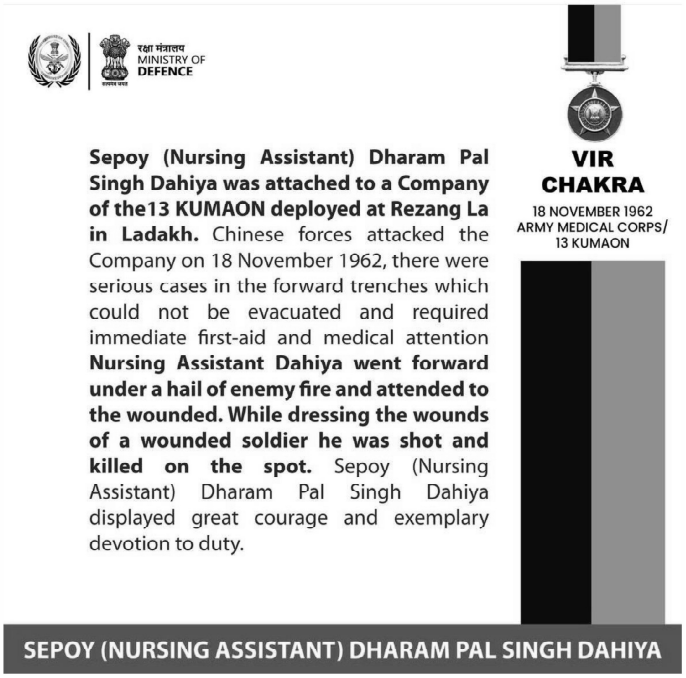

प्रतीत होती थी। फिर भी वे सेक्शन दर सेक्शन जाते रहे – हाथों में मार्फिन की सिरिंज और पट्टियाँ लिए अपने साथियों को बचाने की कोशिश करते हुए। यही एक सच्चे सैनिक और संवेदनशील मानव की पहचान है अपने प्राणों की परवाह किए बिना दूसरों के जीवन के लिए लड़ना। और फिर वह क्षण आया जब एक घायल सैनिक का उपचार करते समय उनके सिर में गोली लगी। वे वहीं वीरगति को प्राप्त हुए, कर्तव्य निभाते हुए, सेवा करते हुए। फरवरी 1963 में जब शहीदों के पार्थिव शरीर मिले, तो धर्मपाल दहिया उसी मुद्रा में पाए गए जैसे अभी भी किसी साथी को जीवन देने की कोशिश कर रहे हों। यह .श्य केवल युद्ध का नहीं, बल्कि मानवता की सर्वोच्च भावना का प्रमाण था। उनकी अद्वितीय वीरता और बलिदान के लिए उन्हें मरणोपरांत वीरचक्र से सम्मानित किया गया। पर किसी पदक से बड़ा उनका वह आदर्श है कर्तव्य, साहस और करुणा का संगम।

धर्मपाल दहिया की कहानी केवल एक सैनिक की कहानी नहीं है। यह उस बेटे की कहानी है जिसने अपने गाँव की मिट्टी का मान बढ़ाया, उस भाई की कहानी है जिसने परिवार को गर्व दिया, और उस वीर की कहानी है जिसने देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। आज जब हम रेजांग ला की गाथा को याद करते हैं, तो यह समझते हैं कि स्वतंत्रता केवल शब्द नहीं यह उन बलिदानों की विरासत है जो ऐसे वीरों ने हमें दी है। शहीद वीरचक्र से सम्मानित धर्मपाल दहिया और उनके सभी वीर साथियों को शत–शत नमन। उनका साहस, त्याग और मानवता सदैव हमारी प्रेरणा रहेगा। रेजांग ला की यह गाथा दिखाती है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हिम्मत, कर्तव्यनिष्ठा और देशभक्ति कैसे इतिहास रच देती है। कुमाऊँ रेजिमेंट और मेजर शैतान सिंह का बलिदान आज भी पूरे देश को प्रेरित करता है।

भगत सिंह का व्यक्तित्व तथा कृतित्व

– तेजपाल सिंह 'देव', (मो० 9968309443)

जंगल में दहाड़ता हुआ सिंह, सरपट दौड़ता हुआ घोड़ा, उमड़ते–घुमड़ते तथा अमृत वर्षा करते बादल, आकाश में कौंधती भागती बिजली की चमक, वनों और जंगलों की नीरवता, पहाड़ी की चोटियों पर चलते–फिरते जानवर, बैलों के गले में बंधे घुंघरूओं की स्वर लहरी, क्या ये प्रकृति के स्वरूप की सौगात नहीं है। ऐसा ही था भगत सिंह का व्यक्तित्व जिसमें प्रकृतिदत्त सभी आयाम थे। वे लेखक, नेता, अभिनेता, अग्रणी, आत्म त्यागी, निर्मल हृदय, मेधावी, तर्कशील दिव्य मानव, विराट पुरुष तथा देवदूत थे और फरिश्ता बनकर इस मृत्युलोक से गमन कर गए। कितनी थोड़ी आयु में सबल एवं सशक्त व्यक्तित्व की आभा फैला गए और भारत की जनता में उनके हृदय सम्राट बन कर स्थापित हो गए। जब तक सूर्य के अन्दर सम्पूर्ण हाइड्रोजन जलकर हीलियम में परिवर्तित नहीं हो जाएगी तब तक भगत सिंह की आभा तथा तेज बरकरार रहेगा।

"भगत सिंह का कद लम्बा, चेहरे का रंग साफ होने पर भी हल्की–हल्की दाढ़ी मूँछ से घिरा चेहरा, उभरी हुई परन्तु हल्की भवै और छोटी–छोटी आँखे, सिर पर ढीले–ढाले बाँधे केशों पर दोनों ओर लटकती छोटी सी पगडी, खद्दर के मैले और प्रायः बेनाप कपड़े। कमर में अक्सर पायजामे की जगह लुंगी पहन कर ही वह कालिज आ जाता।" उनका स्वस्थ शरीर, गेहुएं गेहुएं तथा साफ रंग का बहुत ही खूबसूरत चेहरे से युक्त आकर्षण से भरा था। भगत सिंह सूट–बूट पहन कर खूबसूरत लगते थे। उनकी सुन्दरता के कारण प्रत्येक वस्त्र उनके ऊपर खिल जाता था। उनके चुम्बकीय व्यक्तित्व में सम्मोहन शक्ति थी। दुर्गा भाभी के अनुसार, भगत सिंह का अपना निखरा हुआ, मझा हुआ व्यक्तित्व था जो सर्वथा उसके सादे लिबास और भावपूर्ण व्यवहार में फूटता था। उनके व्यक्तित्व को मूर्तिकार, फोटोग्राफर तथा चित्रकार अंकित नहीं कर सकता था। उनका आकर्षक व्यक्तित्व उनके विचारों एवं उद्देश्य का दर्पण था। वह तरूण सुन्दर यौवन के साथ, प्रथम वयस में माता–पिता का अश्रुपूरित मुख छोड़ घर से देश की स्वतंत्रता की कठिन डगर पर चल दिया। निर्भीक क्रान्तिकारी व अच्छे अभिनेताः जब जेल अधिकारियों ने काल कोठरी के गेट पर आकर कहा, "भगत सिंह फांसी लगाने का फरमान आ गया है तैयार हो जाओ। भगत सिंह ने जवाब दिया ठहरो, लेनिन की जीवनी पढ़ रहा हूँ, एक क्रान्तिकारी दूसरे से मिल रहा है, कुछ पैराग्राफ पढ़ कर पुस्तक छत की तरफ फेंक दी और चल दिए फांसी के फंदे की तरफ। चेहरा शांत था तथा खुशी से चमक रहा था।" असेम्बली में बम फेंकने के उपरान्त भगत सिंह ने गोली से भरा पिस्तौल डेस्क पर रख दिया और दोनों (भगत सिंह तथा बी.के. दत्त) स्वयं ही गिरफ्तार हो गए। चाहते तो वे वहां से निकल सकते थे क्योंकि वहां अफरा–तफरी का आलम था। वे त्याग तथा बलिदान का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत कर गए। अपने अदालती केस में भी उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट रहती थी। ओह। उस मुस्कुराहट में कैसा मधुर आकर्षण था, कितना जादू था, उनकी छोटी–छोटी आँखों में कैसा नूर था, उनकी बातों में कैसा आनन्द था? यह क्या इस दुनिया की चीज है? नहीं, यह तो ईश्वर प्रेरित उन महान आत्माओं में से है, जो कभी–कभी किसी आदर्श की स्थापना के लिए इस धराधाम पर अवतीर्ण होते हैं। यह आत्मा तो आज आजादी के शान्तिमय सिपाहियों को निर्भयता का पाठ पढ़ाने आई है। इस नौजवान ने अपने लिए जो मार्ग निर्धारित किया है, उस पर वह किस शान से चल रहा है और किस बहादुरी से मृत्यु का आलिंगन करने चला है। अपने निर्भीक कार्यकलापों के कारण वे शहीद से शहीद–ए–आजम बन गए। वे पुस्तकों को पढ़ने में इतने लीन हो जाते थे कि काल कोठरी में बन्द मौत की चिन्ता से दूर। वे शहीद "रामप्रसाद बिस्मिल" का गीत बड़े मनोयोग से गाते, ऐसा लगता मानो मृत्यु की हवा तक यहाँ नहीं पहुंचेगी। भगत सिंह तथा उनके क्रान्तिकारी साथियों की क्रान्ति की अवधारणा व्यापक थी यद्यपि इनका दर्शन विवाद का विषय रहा है परन्तु देश के प्रति उनकी निष्ठा, प्रेम, त्याग व वीरता लक्ष्य के प्रति समर्पण–प्रतिबद्धता निर्विवाद है। जिस तरह वे बिना किसी डर के जिये, उसी तरह बिना डर के मरे।

नेशनल कॉलेज में एक नेशनल नाटक क्लब की स्थापना की गई "राणा प्रताप, भारत दुर्दशा तथा सम्राट चन्द्र गुप्त" नाटकों में भगत सिंह अपनी भूमिकाओं में पूरी तरह सफल रहे। "सम्राट चन्द्र गुप्त" के अभिनय से अभिभूत हो उनके प्राध्यापक भाई परमानन्द ने उन्हें मंच पर ही हृदय से लगा लिया और लाड़ से कहा "मेरा भगत सिंह सचमुच भविष्य में चन्द्र गुप्त सिद्ध होगा।"

भगत सिंह देशभक्त, दार्शनिक, विचारक, क्रान्तिकारी राष्ट्रनेता के गुणों से ओत–प्रोत थे। वे दिव्य थे, श्रेष्ठ थे, पूजनीय तथा वंदनीय थे। वे भारत भूमि पर जन्म लेकर परतन्त्रता की बेड़ियों को भंजन करने आए थे और ब्रिटिश हुकूमत का खूंटा हिलाकर चले गए। भगत सिंह पीढ़ियों तक नौजवान लोगों के मस्तिष्क को उद्वेलित करते रहेंगे। आज के विद्वान लोगों की जिम्मेदारी है कि भगत सिंह के द्वारा किए गए महान कार्यों को लगातार प्रसारित करें ताकि हमारे नौजवान आज की विपरीत परिस्थितियों का मुकाबला कर सकें। वे ऐसे राष्ट्रीय नेता तथा विचारक थे जिन्होंने धर्म तथा राजनीति को एक–दूसरे से अलग रखने की वकालत की। वे कमाल की चिन्तन शक्ति के स्वामी थे। वे देश की तरक्की के लिए किसानों, गरीबों तथा मजदूरों को संगठित करने का आह्वान करते थे। वे मानवता के ऐसे कल्याणकारी पुजारी थे, जिनके मन मंदिर में स्वतंत्र भारत माता की मूर्ति प्रतिष्ठित थी। अध्ययन पिपासा इतनी अधिक थी कि जो भी पुस्तक उन्हें मिली उसी को पढ़ डाला। बलवन्त सिंह के नाम से प्रताप अखबार में सम्पादक का कार्य किया। ग्राम–शादीपुर, तहसील, खैर, जिला अलीगढ़, यूपी. में हेडमास्टर के रूप में भगत सिंह सफल रहे। उन्होंने "अर्जुन" के सम्पादकीय विभाग में काम किया, मासिक पत्रिका "कीर्ति" की सम्पादन परिषद् में कार्य किया तथा इस उर्दू पत्रिका में उन्होंने नियमित रूप से क्रान्तिकारी शहीदों की जीवनियाँ लिखी। भगत सिंह ने जेल में चार पुस्तकें लिखी आत्मकथा, दि डोर टू डेथ, आइडियल ऑफ सोशलिज्म, स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार। भगत सिंह उद्देश्यवादी लेखक थे। उनका उद्देश्य था जनता को क्रान्ति के लिए तैयार करना, जागरूक करना, समस्त जानकारी देना तथा प्रेरणा देना। वे अपने उद्देश्य में सफल भी हुए। भगत सिंह का हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी तथा गुरुमुखी पर समान अधिकार था। कोई ऐसा विषय नहीं जिस पर उन्होंने न लिखा हो जैसे भगवान, साहित्य, सौन्दर्य, राजनीति, इतिहास तथा संस्कृति उनके मित्रों का विचार था कि अगर वे क्रान्तिकारी न होते तो एक महान प्रोफेसर होते। "पंजाब की भाषा तथा लिपि" लेख भगत सिंह के भाषा ज्ञान का एक चमत्कार है। "पंजाब हिन्दी साहित्य" ने उपरोक्त विषय पर लेख आमन्त्रित किए तथा सर्वश्रेष्ठ लेख पर 50 रुपये का इनाम देने की घोषणा की। भगत सिंह ने भी इस स्पर्धा में भाग लिया तथा इनाम प्राप्त किया था। यह लेख 28 फरवरी 1933 को हिन्दी संदेश में प्रकाशित हुआ। अपने तेजस्वी व्यक्तित्व व ओजस्वी विचारधारा के कारण 23 वर्ष की अल्पायु में भगत सिंह ने जिस प्रकार अपने को योग्य और अनुकरणीय बना लिया था।

वह सराहनीय है। वे एक प्रभावशाली वक्ता भी थे। जस्टिस फोर्ड ने भगत सिंह के सोशलिस्ट चिन्तन की प्रशंसा करते हुए कहा था–

"भगत सिंह एक विश्वसनीय क्रान्तिकारी है उसे विश्वास है कि वर्तमान सामाजिक ढाँचे को समाप्त करके ही विश्व को बेहतर बनाया जा सकता है" भगत सिंह ने जेल से अधीक्षक की मार्फत पंजाब गर्वनर के नाम पत्र लिखा– "अतिशीघ्र अंतिम संघर्ष के आरम्भ की दुंदुभी बजेगी क्योंकि साम्राज्यवाद और पूंजीवाद अपनी अन्तिम घड़ियाँ गिन रहे हैं। हमने संघर्ष में हाथ बटाया था और हमें अपने कार्य पर गर्व है।" भगत सिंह को मात्र एक महान देशभक्त समझना भूल होगी, क्योंकि वे राष्ट्रीय संघर्ष में एक नवीन युग के आदर्श प्रतिनिधि के रूप में महानतर थे, उनका शानदार क्रान्तिकारी जीवन संघर्षरत जनता की उद्दाम भावना का प्रतीक था। परिणामस्वरूप भगत सिंह का राष्ट्र को दिया "इन्कलाब जिन्दाबाद" का नारा राष्ट्र ने तेजी से स्वीकार कर लिया। भगत सिंह राष्ट्रीय परि.श्य पर एक महान आत्म बलिदानी के रूप में उभर कर आये। सारी दुनिया में उसके ज्ञान, कुशाग्र बुद्धि, चतुराई तथा विद्या को स्वीकार किया गया। वे बुद्धिजीवी विद्वान तथा तीक्ष्ण योग्यता से लामबन्द थे। वे अपने समय के समान देशभक्तों में एवरेस्ट की तरह ऊँचे थे।

विश्वव्यापी दृष्टिकोणः भगतसिंह शिष्ट थे, हंसमुख थे। इसलिए उन्हें व्यापक रूप से उस श्रेणी की लोकप्रियता मिली जिसमें एक प्रकार का देवत्व आ जाता है या जिसे हम अभिनेता कहते हैं। उदासी उनके चेहरे पर कभी भी विराजमान नहीं होती थी प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रहते थे। फाँसी का हुक्म होने के बाद बहुत से अंग्रेज स्त्री पुरूष भगत सिंह से उनकी काल कोठरी में मिलने आते थे। भगत सिंह उनसे दिल खोल कर मिलते, प्यार से बातें करते। खूब हंसते तथा उन्हें हंसाते थे। अंग्रेज उस समय भूल जाते थे कि वे अपनी जाति के किसी शत्रु से मिल रहे है। वास्तविकता तो यह थी कि वे अंग्रेजों के दुश्मन नहीं थे बल्कि शोषणकारी अंग्रेजी साम्राज्य के बैरी थे। उदास दुर्गा भाभी जब मुलाकात के लिए जेल जाती तो भगत सिंह कहते थे उदासी किसलिए? वे गानों के शौकीन थे और स्वयं भी सुरीले स्वर में गाते थे। वे रसगुल्ले को मिष्ठानों में सबसे अधिक पसन्द करते थे। वे फिल्म देखने में भी दिलचस्पी रखते थे। उनके दोस्तों ने अपने संस्मरणों में भगत सिंह की प्रिय फिल्म "अंकल टाम्स केबिन", "विंग्स" "उजाला", "डोर", चार्ली की कई फिल्मों तथा अनारकली की चर्चा की है। उनकी तार्किक बौद्धिकता तथा स्वभाव में भाव प्रवणता, उनके ऐसे गुण थे जिनके कारण वे किसी को भी अपना मित्र बनाने में सक्षम थे। 30 सितम्बर, 1930 को उनके पिता किशन सिंह ने बेटे से पूछे बिना ट्रिब्यूनल को एक अर्जी देकर बचाव पेश करने की अनुमति चाही, भगत सिंह ने अपने पिता को इसके विरोध में कठोर पत्र लिखा जो पत्र उनके पिता जी ने हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी और पंजाबी के अखबारों में छपवाया। वे सारे संसार के लोगों को स्वतंत्र देखना चाहते थे तथा गरीबी व आर्थिक शोषण से मुक्त होने का स्वप्न देखते थे। अगर उनको लम्बा जीवन मिलता तो वे पूरे विश्व के समानता के मार्ग को प्रकाशित करते।

भगत सिंह भारत के ऐसे रत्न का नाम है जो स्वयं में एक संस्था थी सद्भावना, सांप्रदायिक सौहार्द एवं समभाव का प्रतीक था। वह अपनी अनूठी और अनुपम विशेषता के कारण औरों से स्पष्ट पृथक दिख पड़ता है, अपने ढंग का अनोखा और अपने काम में औरों से निराला।

सपनों को पाने के लिए, नींद से नहीं मेहनत से दोस्ती करनी पड़ती है।

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB 01.11.98) 27 5'5" B.Com. M.Com (Psychology), B.Ed., CTET qualified. Working in government office in Chandigarh on contract basis. Father retired Under Secretary from Haryana Civil Secretariat. Mother housewife. Avoid Gotras: Nehra, Rathi, Hooda, Duhan. Cont.: 9417347896*
- *SM4 Jat Girl (DOB 20.12.96) 29 5'4" M.S. (Surgery). College topper from Pitanjali Ayurvedic Medical College Haridwar. B.A.M.S fro Shri Krishna AYUSH University Kurukshetra. Working as Assistant Professor at COER University Roorkee (Uttrakhand). Father S.I. PS Barwala, Hisar. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Jakhar, Sihag, Nain. Cont.: 8307986833*
- *SM4 Jat Girl (DOB 01.05.94) 31/5'2" M.A. English from Punjab University. JBT. B.Ed. from Punjab University. CTET-tgt. Thrice, HTET-jbt. Four times, HTET-pgt. Twice, TET-jbt. Twice. Working as Government primary teacher in Punjab near Chandigarh. Father Deputy Manager in HMT. Pinjore. Avoid Gotras: Sangwan, Phogat, Pilania. Cont.: 9416869289*
- *SM4 Jat Girl (DOB 09.06.96) 29 5 feet B.Sc. Nursing from LLRM Medical College, Meerut. Employed as Nursing Officer at Banaras Hindu University Banaras. Income Rs. 10-15 LPA. Cont.: 9760874881.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 25.09.98) 27/5'5" MA. Pursuing Diploma in Cyber Security from GJUS Hisar. Steno in Hindi & English. She is under training CTI (Steno Instructor) under Ministry of Skill for Women in ITI Jaipur. Father retired from Army and now in Government job. Avoid Gotras: Moond, Nain, Rabiya. Cont.: 9467746241.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 25.10.95) 30/5'6" B.Com from Maharaja College Jaipur. M. Com (Economics, Administration & Financial Management) from University of Rajasthan. Father Hony. Captain in Army. Mother housewife. Avoid Gotras: Dudhwal, Dhaka, Burdak, Bajiya. Cont.: 9549901996*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1999) Height 5 feet. B. A. Statistics M. A. Economics. Working as DEO in CTU Chandigarh on contract basis. Income Rs. 3.60 LPA. Avoid Gotras: Bamal, Malik, Kaliraman. Cont.: 9815109960*
- *SM4 Jat Girl (DOB April 1998) 27/5'7". B.Sc. Medical. Employed as Constable in Haryana Police. Father expired. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Nain, Malik, Dhull. Cont.: 9468407521*
- *SM4 Jat Girl (DOB 20.06.98) 27/. B.Sc. Nursing form PGI Chandigarh. Employed as Nursing Officer in PGI Chandigarh. Father Inspector retired from Haryana Police. Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, , Moga. Cont.: 9468407521*
- *SM4 Jat Girl (DOB 06.11.94) 31/. B. A. from Kurukshetra University. M.Sc. Geography from GJUS Hisar. B.Ed. from CRSU Jind. Father ex-service man and now working in UCO Bank. Family settled at Hisar. Avoid Gotras: Chahar, Saharan, Duhan. Cont.: 9068616400, 9467426435*
- *SM4 Jat Girl (DOB 15.06.2000) 25/5'6" B.A. from Miranda House University of Delhi. M. A. Economics from IJNU. Bachelor of Education from Greenwood College of Education. Diploma in Early Childhood. CTET passed. Father retired from Army, now employed in SBI. Bank. Mother housewife. Family settled at Karnal. Avoid Gotras: Kaliramana, Banger, Mathur. Cont.: 9466942154 9467426435*
- *SM4 Jat Girl (DOB 06.02.93) 33/5'3" B.A. B.Ed. M.A. from Punjab University. Working as teacher in a private school at Mohali. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944, 7837908258*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.11.94) 31/5'7" B.Sc. from MCM DAV College for women Chandigarh. M. A. Economics from DAV College Chandigarh. Working as Cabin Executive in Air India. Father's own Business (Book shop). Mother housewife. Own residence in Chandigarh. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607*
- *SM4 Jat Girl (DOB 27.09.96) 29/5'4" M.A., B.Ed. Employed as Constable in Chandigarh Police. Father farmer. Avoid Gotras: Saharan, Malik, Khunga. Cont.: 9813528523*
- *SM4 Jat Girl (DOB 04.03.2000) 25/ B.Sc. Physics (Hons.), B.Ed. Employed in Ministry of Housing & Urban Affairs (Govt. of India) as L.D.C., posted at Ludhiana. Likely to be posted in Chandigarh. Father's own business. Mother Government Teacher. Family settled at Rajpura (Punjab). Avoid Gotras: Lamba, Tomar. Cont.: 9316440789, 9316253179*
- *SM4 Jat Girl (DOB 01.10.91) 34 B.Sc. Hons. Biotechnology. Working as Science Teacher in reputed private school. Father (late.) Agriculture Extension Officer. Mother housewife. Family settled at Rajgarh (H.P.) Preference Government job in Chandigarh, Panchkula. Avoid Gotras: Ahlawat, Rathi, Balyan. Cont.: 8627912782, 9816414984.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.09.98) 27/5'3" Bachelor of Engineering. Working as I.T. Software Engineer in a reputed MNC (T.C.S.) at Indore. Avoid Gotras: Sangwan, Rathi, Nandal. Cont.: 9303068646*
- *SM4 Jat Girl (DOB 26.10.96) 29/5'2" MBBS, BPS from Govt. Medical College Sonepat. DNB medicine from MAMC Agroha. Doing SR ship at GMCH Sector 32 Chandigarh. Father late Ex-serviceman & retired Inspector from Haryana Roadways. Mother ANM in NHM. Preferred MD/MS/DNB or first class officer. Family settled at Kalka, Pinjore. Avoid Gotras: Narwal, Nain, Dhanda. Cont.: 9034240791*
- *SM4 Divorced Jat Girl (DOB 10.02.91) 34/5'2" MBA, HR management from GJU Hisar. B. Tech. (CSE) from K.U.K. affiliated University. Previously Senior HR in I.T. Company in Noida. Package Rs. 8 LPA. Father retired SR lecturer DIET Haryana government. Family settled at Bhiwani. Avoid Gotras: Kasania, Beniwal. Cont.: 9416921521, 9205756432*
- *SM4 Jat Girl (DOB 01.09.96) 29/5'3" M. Com. from Punjab University Chandigarh. UGC, NET Commerce qualified. Father's Jewelry business. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Dagar, Dhull. Cont.: 9896290431*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298*
- *SM4 Jat Boy (DOB 25.12.97) 28/5'8" Bachelor of Commerce. Working as Assistant Manager in IDBI Bank. Avoid Gotras: Sangwan, Khasa, Jangu, Beniwal. Cont.: 9068574655*
- *SM4 Jat Boy (DOB 10.07.89) 35/5'10" B. Tech. Civil Engineering. Employed as Sub Inspector in Delhi Police. Father expired. Mother Officer retired from Women & Child Development Department Haryana. Family settled in Mohali (Punjab). Brother and sister married. Avoid Gotras: Beniwal, Brar, Nain. Cont.: 9877086741*
- *SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 26/ B.Com. Diploma in Computer Hatron. Own business of mobile repair. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Barak, Dalal, Kadyan. Cont.: 8146229865, 9877552019*
- *SM4 Jat Boy (DOB 27.06.96) 29/5'9.5" MA. (GEO) from Punjab University. B.Ed. Employed as Office Superintendent in Indian Railways. Salary Rs. 7-8 LPA. Family income Rs. Approx. 20 LPA. Father lecturer retired. Mother M.A., B.Ed. ex-teacher. Family settled in Ambala. Shop in Ambala Cantt. Agriculture land in village near Ambala Cantt. Avoid Gotras: Gill, Billing, Bilam. Cont.: 9417064917*
- *SM4 Jat Boy (DOB 03.04.2000) 25/5'10" M. Tech. in Electrical Engineering from PEC Chandigarh. Employed as Assistant Manager in Central Bank of India. Father Principal in SRM Polytechnic near Naraingarh, Ambala. Mother employed in Haryana Government. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Hooda, Kadyan, Nehra. Cont.: 8398960130*
- *SM4 Jat Boy (DOB 16.02.94) 32/5'9" B. Tech. in Computer Science & Engineering from Kurukshetra University. Employed as Officer in Haryana Government, selected by HPSC. Father retired Lt. Colonel. Mother M. Phill, B.Ed. housewife. Family settled at Ambala City. Avoid Gotras: Sandhu, Mahla, Sindhur. Cont.: 9466442353*
- *SM4 Jat Boy (DOB 14.06.93) 32/5'7" B. Tech. Working as SR CRA in Noida Metro Rail. Income Rs. 68 K Per month. Father retired from DTC. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Balhara, Phogat. Cont.: 9671377166*
- *SM4 Jat Boy (DOB 09.06.2000) 25/ 6feet. Employed in Navy. Salary Rs.*

पतंग अगर बहुत दूर निकल जाए तो धागा तोड़ना ही ठीक है.. समेटोगे तो सबकुछ उलझ जाएगा...!

15 lac Per year. 27 acre agriculture land, three plots, six shops. Avoid Gotras: Beniwal, Dhaka, Dhanda. Cont.: 9813130081, 7027100015

- *SM4 Jat Boy (DOB 30.01.98) 28/5'9" M.A. Geography, NET qualified, Employed in Haryana Police. Father MPHW (M) in Health Department. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Nehra, Dhull, Duhan. Cont.: 8685839986, 9992096462*
- *SM4 Jat Boy (DOB 27.06.96) 29/5'8" Master in Computer Science from University of Waterloo, Canada. B. Tech. Computer Science from GNDEC Ludhiana. Working as IT Consultant in I.T. MNC in Toronto, Canada. (Canadian PR). Salary S60000 CAD. Father working as GM (Engineering) in reputed Company. Mother housewife. Preferred working professional in Canada. Avoid Gotras: Kaswan, Panwar. Cont.: 9814622289*
- *SM4 Jat Boy (DOB 22.06.88) 37/5'10" MBA in Marketing & B. Tech. in ECE. Working in a reputed Company EY. Salary Rs. 45 LPA. Father working as GM (Engineering) in reputed Company. Mother housewife. Avoid Gotras: Kaswan, Panwar. Cont.: 9814622289*
- *SM4 Jat Boy (DOB 02.05.98) 27/6'3" B. A. from Punjab University. Global Business Management from Conestoga College Waterloo, Canada. Working as Correction Officer, Ministry of Solicitor General Government of Ontario, Canada. Package 80K Canadian dollars PA. Father Inspector in CISF. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Kundu, Dhanda, Bhoker. Cont.: 7696873937*
- *SM4 Jat Boy (DOB 19.05.91) 34/5'9" Diploma and Degree in Electrical Engineering. Own business. Family settled in Panchkula. Elder brother in Canada. Sister married. Avoid Gotras: Malik, Nandal. Cont.: 9417005229*
- *SM4 Jat Boy (DOB 19.05.96) 28 MBBS from PGI Rohtak. Preparing for MD. In PGI. Father expired, retired from Army. Mother pensioner & housewife. Preferred MBBS girl. Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, Moga, Dhull. Cont.: 9468407521*
- *SM4 Jat Boy (DOB 10.12.99) 26/5'11" B. Tech. Computer Science from Chandigarh University. Self Business of Study Immigration at Chandigarh. Income approx. Rs. one lakh per month. Parents both in Government Job. Preference Government/well educated. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Sangwan, Dhull, Panwar. Cont.: 9501005215, 9463187897*
- *SM4 Jat Boy (DOB 15.11. 95) 30/6feet B. Tech, CSE. Working as Senior Manager at Navartis Hyderabad. Total experience 7.5 years. Income Rs. 50-60 lakh per year. Father retired from Air Force. Mother home maker. Family settled at Zirakpur. Preference Job oriented. Avoid Gotras: Lakra, Malik, Maan. Cont.: 7989389447*
- *SM4 Jat Boy (DOB 21.02. 2000) 25/6'1" B. Tech. Civil engineering from Punjab Engineering College. Gold Medalist & President Awardee (2022 Batch) Employed in Central Government PSU Officer. ('Engineers India Limited' Under Ministry of Petroleum & Natural Gas), Delhi/Gurugram. Father Assistant Sub-Inspector in Chandigarh Police. Mother home maker. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Hooda, Dahiya, Gahlawat. Cont.: 9417937113*
- *SM4 Jat Boy (DOB 25.08.96) 29/5'9" B. Tech, MA. Employed as officer in Government bank. Preparing for civil services. Father retired Sub-Inspector from Haryana Roadways. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Bamel, Narwal, Punia. Cont.: 9467645319, 7696322587*
- *SM4 Jat Boy (DOB 10.12. 95) 30/5'10" B.Tech. Self employed in Chandigarh. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Lochab, Hooda, Dhankar. Cont.: 8146991568*
- *SM4 Jat Boy (DOB 12.09.97) 28/5'7" B. Tech (CSE) from LPU Jalandhar. Working in I.T. Sector Hyderabad. Salary Rs. 27.30. LPA. Father Assistant Director in Khadi & Village Industry Commission at Ambala Cantt. Mother housewife. Own house in Zirakpur (Punjab). Two acre agriculture land. Avoid Gotras: Hooda, Ahlawat, Siwach. Cont.: 8360153519, 7696046215.*
- *SM4 Jat Boy (DOB 29.09.91) 34/5'8" PhD Structural Engineering JRF and six time gate qualified worked as Guest facility at DCRUST murthal but not now. Preparing H P S C posts father Mahipal Gill Associate Prof. of Physics (Rted) Jat Collage Rohtak, mother Principal (Retd) Grand mother Head teacher (Retd) & One younger Brother P MSc. Two plots 107 yds Native Village Kharenti, Rohtak. Avoid Gotras: Gill .Dahiya. Gahlwat Direct Khrab. Cont.: 9416193949, 9991806472*

यूपीएससी 2025 जाट समाज से चयनित अभ्यर्थी

हम उम्मीद करेंगे कि समाज के युवा देश में समाज का नाम रोशन करें सभी चयनित जाट समाज के IAS, IPS, IRS को बहुत–बहुत बधाई व शुभकामनाएं। जाट की अदालत उम्मीद करता है कि आगामी वर्ष में इस संख्या से दुगनी तादात में चयनित होकर आए और समाज और देश का नाम रोशन करें।

1	एकांश ढुल	3	15	दिव्या तौमर	182	29	सौरभ बुडानिया	544
2	भाविका चौपरा	25	16	दिशा धनकड	235	30	निशा फौगाट	574
3	प्राची पवार	59	17	अमन अलून	295	31	अभिषेक चौधरी	623
4	अन्यया राना	60	18	कृतिका चौधरी	312	32	विजयपाल विजरानियां	653
5	राखी दलाल (बजाड़)	65	19	श्रुति ओला	329	33	कृति चौधरी	760
6	देवेंद्र लाम्बा	70	20	राहुल चौधरी	332	34	अपेक्ष राज	761
7	हर्ष नेहरा	74	21	सूर्या गोदारा	343	35	चन्द्र वाहिनी चौधरी	662
8	प्रियंका चौधरी	79	22	मुदित फौजदार	353	36	गौरव जाट	792
9	गौरव चोपडा	83	23	सुनीता डूडी	364	37	विवेक कटारिया	845
10	वरूण टोकस	117	24	स्वाति आर्य	366	38	अंशुल चौधरी	872
11	भावेश जांगलान	128	25	यशवंत सांगवान	391	39	अनुराग चौधरी	884
12	मानसी डागुर	137	26	साहिल सिंहाग	500	40	अजय संधु	928
13	विकास सिंह पवार	159	27	नरपेनद्र कुमार तोमर	531	41	जगदीश प्रसाद, खोखर	932
14	नीरज तरार	180	28	विपिन चौधरी	538	42	सुनीता श्योराण	958

कामयाब होने के लिए, अकेले ही आगे बढ़ना पड़ता है। लोग तो पीछे तब आते है, जब आप कामयाब होने लगते है।।

हमें जिन पर गर्व है।

Sh. Vivaan Gill S/o Sh. Ravinder Gill, (Life Member of Jat Sabha Chandigarh, Panchkula and Ch. Chhotu Ram Seva Sadan, Katra (Jammu) Grandson of Sh. B.S. Gill, Secretary, Chandigarh, Panchkula and Ch. Chhotu Ram Seva Sadan, Katra (Jammu) has successfully completed his B.Com (Hons) and has consistently been a brilliant student throughout his academic journey. His remarkable achievement of clearing the Chartered Accountancy (CA) examination in his first attempt is truly commendable.

All members of the Jat Sabha (Chandigarh & Panchkula) and the Ch. Chhotu Ram Seva Sadan (Katra-Jammu) extend their heartfelt greetings and gratitude, and pray to the Almighty for his and his entire family's good health and a prosperous future.

विश्व ओपन मास्टर्स गेम्स 2026 में भारतीय बास्केटबॉल के दिग्गज खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन

6 से 15 फरवरी 2026 तक अबू धाबी में आयोजित प्रतिष्ठित विश्व ओपन मास्टर्स गेम्स 2026 में 55 आयु वर्ग में राष्ट्रीय बास्केटबॉल टीम द्वारा कांस्य पदक जीतने के साथ ही वैश्विक मंच पर भारत की खेल भावना का जबरदस्त प्रदर्शन हुआ। इन खेलों में 92 देशों और 25,000 से अधिक एथलीटों ने 38 विभिन्न खेल स्पर्धाओं में भाग लिया, जो एक विशाल अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन था। विभिन्न खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व 68 एथलीटों ने किया, जो वैश्विक स्तर पर मास्टर्स खेलों में देश की बढ़ती उपस्थिति को दर्शाता है। इनमें से 12 एथलीट भारतीय बास्केटबॉल टीम का हिस्सा थे, जिनके दृढ़ संकल्प और टीम वर्क ने उन्हें पोडियम पर जगह दिलाई।

Sh. M.S. Hooda, (Retd) Dy. Director, Sports Haryana and other player

अबू धाबी में मिला यह कांस्य पदक भारत के लिए गौरव का क्षण है, जो वरिष्ठ एथलीटों के समर्पण और देश में मास्टर्स खेलों की क्षमता को उजागर करता है।

तिरंगे को सम्मानित किए जाने के उपलक्ष्य में, यह उपलब्धि निस्संदेह न केवल वरिष्ठ नागरिकों बल्कि युवाओं को भी फिटनेस और प्रतिस्पर्धी खेलों को अपनाने के लिए प्रेरित करेगी, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि भारत आने वाले वर्षों में अंतरराष्ट्रीय मास्टर्स प्रतियोगिताओं में अपनी छाप छोड़ना जारी रखेगा।

मेहनत के बगैर तो कुछ भी हासिल नहीं होता। अगर अपनी परछाई भी देखनी हो तो रोशनी में आना ही पड़ता है।।

आर्थिक अनुदान की अपील

आवासीय परिसर

जैसा कि आपको विदित है कि जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान, कटरा–जम्मु में 10 कनाल भूस्थल पर दीनबंधु चौ० छोटूराम यात्री निवास के नाम से एक विशाल बहुमंजलीय भवन का निर्माण किया जायेगा। यात्री निवास के निर्माण, विस्तार व रख–रखाव आदि पर वर्ष 2019 से अब तक लगभग 2,36,52000 (दो करोड़ छतीस लाख बावन हजार) रुपये की राशि खर्च हो चुकी है और लगभग 63,50,000 (तरेसठ लाख पचास हजार) रुपये अनुदान के तौर पर प्राप्त हुये। आप सब के सहयोग से यात्री निवास स्थल पर इस समय शौचालय व बाथरूम सहित पांच वातानुकुलित डबल बैड कमरों व 15 बैड की डोरमैट्री का निर्माण किया गया है। यात्रियों की सुविधा के लिये भोजन की व्यवस्था हेतू कैन्टीन का निर्माण कर दिया गया है। इसके अलावा बिजली, पानी की उचित व्यवस्था के लिये 11 के.वी. ट्रास्फॉर्मर व सबमर्सिबल ट्यूबवेल लगा दिया गया।

इस प्रस्तावित यात्री भवन के निर्माण में कुछ स्थानीय प्रशासनिक व भूगोलिक तकनीकी दिक्कते आ रही है। इसलिये बुहमंजलीय भवन का निर्माण कार्य प्रशासन की स्वीकृति मिलते ही शुरू कर दिया जायेगा और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग व माता वैष्णों देवी की कृपा से इस विशाल प्रोजैक्ट का निर्माण अवश्य पूरा होगा।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके अलावा भवन निर्माण हेतू 11,000 रुपये या अधिक राशि देने वाले सभी दानी सज्जनों का अनुदान बोर्ड यात्री निवास परिसर में शीघ्र लगाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172-5086180, M-9877149580**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870,M-9467763337
Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू M-9320693332

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोसियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।